ॐ

।। ॐ ह्रीं नमः ।।

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

श्रीवृत अनुसंधान केन्द्र

सम्पूर्ण नवरात्र एवं दीपावली मुहूर्त्त विवेचनम्

(शारदीय नवरात्र : वर्ष 2019)

विशेष आकर्षण

संधि पूजा मुहूर्त्त

कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त्त

अमृत सिद्धि योग एवं रवि पुष्य मुहूर्त्त

दीपावली पूजन मुहूर्त्त

दुर्गा सप्तशती पाठ विधि

अध्याय का हवन मंत्र

कलश स्थापना विधि एवं

पूजन के सामान्य नियम

ॐ कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।

सौजन्य से :– **श्री अभिषेक कुमार**

सादर समर्पण

परमपूज्य गुरुदेव श्री अरविंद सिंह जी महाराज को

जिन्होंने मुझे गुरु दीक्षा प्रदान की एवं मनोवांछित उच्च कोटि की महाविद्या साधना एवं उपासना पद्धति प्रदान की और वास्तविक आध्यात्म के गुप्त रहस्यों से परिचित कराया एवं ब्रह्म ज्ञान तथा सिद्धियाँ प्रदान की

तथा

—: विशेष धन्यवाद :—

अपने माता–पिता एवं उन सभी मित्रों तथा शिष्यों को, जिन्होंने मेरी आध्यात्मिक यात्रा में हर पल मेरा साथ दिया और मेरी उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया

❮❄❯❄❮❄❯❄❮❄❯

❄प्रस्तावना❄

आदरणीय मातृ अनुरागी धर्म प्रेमी भक्तजनों,

शारदीय नवरात्र वर्ष 2019 का संपूर्ण मुहूर्त्त विवेचन आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। एक कठिन एवं लगातार परिश्रम के बाद यह इतना सरल रूप में एवं आसानी से समझ में आने के लायक बना है। यह परमपूज्य गुरुदेव जी के द्वारा दी गयी उन उच्च कोटि के दीक्षाओं का ही प्रबल प्रताप है कि मैं इन पराशक्तियों पर, ब्रह्मविद्याओं पर, दस महाविद्याओं पर कुछ लिखने के लायक बना। आमतौर पर बाजार में जो पंचांग प्रचलित हैं, वे अत्यंत क्लिष्ट होते हैं और संस्कृत की दुरुह भाषा में होते हैं, जो कि एक सामान्य एवं कम–पढ़े लिखे लोगों की समझ से अत्यंत दूर होते हैं। कुछ पंचांगों में तो मुहूर्त्तों, पर्वों के निर्धारण, दिनमान आदि में इतनी गलतियाँ होती हैं कि अच्छे–अच्छे पंडितों एवं ज्योतिषाचार्यों के समझ के बाहर की चीज होती है। आदिशक्ति माता जगदम्बा की साधना एवं पूजा जनसामान्य से लेकर धर्म एवं ज्योतिष के महापंडितों में समान रूप से प्रचलित है। सभी को माँ के प्रेम एवं वात्सल्य की आवश्यकता होती है। प्रत्येक घरों में इनकी उपासना नवरात्र के इन नौ दिनों में विभिन्न प्रकार से संपन्न की जाती है। अधिकतर घरों में या पूजा समितियों में कलश स्थापना की जाती है। समय एवं मुहूर्त्त का बहुत महत्व होता है। एक ही कार्य विभिन्न समय में करने से उसका कुछ अलग प्रतिफल आता है। जनसामान्य के इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मैंने संस्कृत के दुरुह, कठिन एवं नसमझ में आने वाले शब्दों का सरलीकरण कर आम लोगों के समझ में आने वाली भाषा में इस संपूर्ण नवरात्र मुहूर्त्त विवेचन को बनाया है। इंटरनेट पर भी जो पंचांग उपलब्ध हैं, वे समझ में तो आते हैं, पर बहुत समय खाने वाले एवं पेज की बर्बादी करने वाले। एक जगह पर कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। अगर कोई व्यक्ति इस नवरात्र के संपूर्ण मुहूर्त्त हेतु प्रिंट निकाले, तो उसे कम–से–कम 15–20 पेज का प्रिंट निकालना होगा। वेबसाइट को आकर्षक बनाने हेतु गहरे कलर का बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। प्रिंट आउट का खर्च बहुत ज्यादा वहन करना पड़ जाएगा। इन्हीं सब कठिनाइयों को देखते हुए मेरा यह प्रयास रहता है कि अधिक–से–अधिक साधकों/ उपासकों के पास पूर्ण रूप शुद्धता के अति निकट मुहूर्त्तविवेचन प्रस्तुत किया जाय। इसे आप लोग फोटो कॉपी करवा कर अन्य लोगों को भी वितरित कर सकते हैं। कम खर्च में अधिक लोगों तक पहुंचाने का संकल्प। अब यह आप पाठकों/ भक्तों का प्रेम एवं आलोचना ही बताएगी कि मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल रहा हूँ। कोशिश करूंगा कि अगले साल से इसे एक लघु पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत कर खुले बाजार में ही उतारूं। पटना के एक सुविख्यात आश्रम से भी प्रत्येक साल गुरु पूर्णिमा पर प्रकाशित वार्षिक पत्रिका में नवरात्र का मुहूर्त्त विवेचन एवं पाठ विधि छपा रहता है। लेकिन उस पत्रिका में मात्र 10–20 पेजों पर ही वास्तविक जानकारी छपी रहती है और बाकी के 70–80 पेजों पर केवल विज्ञापन। पैसे लेकर व्यापारी शिष्यों का प्रचार–प्रसार केवल। और जानते हैं पत्रिका का मूल्य कितना है, 100–150 रुपये तक। बेचारे सीधे–सादे शिष्य लोग, केवल नवरात्र का मुहूर्त्त जो कि मात्र दो या तीन पेजों में छपा रहता है, उसकी जानकारी के लिए इतने पैसे खर्च करते हैं और तथाकथित गुरु जी महाराज एवं उनके आधे–अधूरे शिष्यों/कर्मचारियों की बंदर घुड़की सुनते हैं, सो अलग। मैं भी पहले वहीं से खरीदता था। गजब का शोषण है, उस आश्रम में। आध्यात्म के नाम पर धन का शोषण, मन का शोषण इत्यादि।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

// माता ही प्रथम गुरू हैं //

"आदि शक्ति जगदम्बा मेरी गुरु हैं, और मैं उनका शिष्य"

या देवि सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

—: नवरात्र के शुभ अवसर पर विशेष शुभ मुहूर्त्त विचार :—

{*ई0 सन् 2019, विक्रमी संवत् 2096, शक् संवत् 1941*}

1. **प्रथमा** – 29/09/2019 (रविवार) – कलश स्थापन, शैलपुत्री पूजन एवं चंद्र दर्शन मुहूर्त्त – हस्त नक्षत्र (शाम में 07:11 PM तक) – ब्रह्मा योग– (प्रथमा तिथि 28 तारीख के रात्रि में 12:06 AM से 29 तारीख की रात्रि में 08:12 AM तक है।) – चंद्र दर्शन शाम में 5:35 PM से 6:19 PM तक होगा (चंद्रदर्शन कुल 44 मिनट)।
2. **द्वितीया** – 30/09/2019 (सोमवार) – ब्रह्मचारिणी पूजन – चित्रा नक्षत्र (दिन में अपराह्न 04:32 PM तक) – इन्द्र योग – (द्वितीया तिथि 29 तारीख के रात्रि में 08:13 PM से 30 तारीख के शाम में 04:54 PM तक है।)
3. **तृतीया** – 01/10/2019 (मंगलवार) – चंद्रघण्टा पूजन एवं सिंदूर तृतीया – स्वाति नक्षत्र (दिन में अपराह्न 02:24 PM तक) – वैधृति योग – (तृतीया तिथि 30 तारीख के अपराह्न 04:55 PM से लेकर 01 तारीख के दिन में अपराह्न 01:55 PM तक है।)
4. **चतुर्थी** – 02/10/2019 (बुधवार) – कुष्माण्डा पूजन – विशाखा नक्षत्र (दिन में अपराह्न 12:55 PM तक) – विषकुम्भ योग–(चतुर्थी तिथि 01 तारीख के दिन में 01:56 PM से 02 तारीख के दिन में 11:45 AM तक है।)
5. **पंचमी** – 03/10/2019 (गुरुवार) – स्कन्दमाता एवं महासरस्वती (भगवती कौशिकी) पूजन – अनुराधा नक्षत्र (दिन में 12:48 PM तक) – प्रीति योग –(पंचमी तिथि 02 ता० के दिन में 11:46 AM से 03 ता० के दिन में पूर्वाह्न 10:15 AM तक है।)
6. **षष्ठी** – 04/10/2019 (शुक्रवार) – बिल्व अभिमंत्रण, कात्यायनी पूजन – ज्येष्ठा नक्षत्र (दिन में 12:18 PM तक तत्पश्चात् ज्येष्ठा नक्षत्र प्रारंभ) – आयुष्मान योग – (षष्ठी तिथि 03 ता० के दिन में सुबह 10:16 AM से 04 ता० के दिन में सुबह 09:40 AM तक है।)
7. **सप्तमी** – 05/10/2019 (शनिवार) – भद्रकाली अवतार, कालरात्रि पूजन, दुर्गा प्राण प्रतिष्ठा एवं दर्शनम् – मूल नक्षत्र (दिन में 01:18 PM तक) – सौभाग्य योग– (सप्तमी तिथि 04 ता० के सुबह में 09:41 AM से 05 ता० के सुबह में 9:47 AM तक है।)
8. **अष्टमी** – 06/10/2019 (रविवार) – महागौरी पूजन, कुमारी कन्या पूजन (बंगाली/नेपाली समाज में) – पू०षा० नक्षत्र (दिन में अपराह्न 03:05 PM तक) – शोभन योग – (अष्टमी तिथि 05 ता० के सुबह में 9:48 AM से 06 ता० के दिन में 10:56 AM तक है।)
9. **नवमी** – 07/10/2019 (सोमवार) – सिद्धिदात्री पूजन, कुमारी कन्या पूजन, नवरात्र व्रत का हवन एवं पूर्णाहुति तथा बलिदान – उ०षा० नक्षत्र (शाम में 05:21 PM तक) – अतिगंड योग – (नवमी तिथि 06 ता० के दिन में 10:57 AM से 07 ता० के दिन में 12:42 PM तक है।)
10. **दशमी** – 08/10/2019 (मंगलवार) – विजया दशमी, दशहरा, कलश विसर्जन, देवी प्रतिमा विसर्जन, रावण दहन, शमी वृक्ष पूजन एवं अपराजिता पूजन – श्रवण नक्षत्र (रात्रि में 08:16 PM तक) – सुकर्म योग– (दशमी तिथि 07 ता० के दिन में 12:43 PM से लेकर 08 ता० के दिन में अपराह्न 02:47 PM तक है।) – श्रवण नक्षत्र में ही देवी की प्रतिमा का विसर्जन करने का उत्तम मुहूर्त्त माना जाता है।

—: माता का आगमन एवं प्रस्थान :—

नवरात्र का प्रारंभ रविवार से है। अतः इस बार माता का आगमन हाथी (गज) पर हो रहा है। विजयादशमी मंगलवार को पड़ रही है। अर्थात् माता का प्रस्थान शनिवार को हो रहा है। अतः देवी का प्रस्थान कुक्कुट (मुर्गा) पर होगा।

पंडितों एवं ज्योतिषाचार्यों ने माँ के गज (हाथी) पर आगमन को शुभ एवं मुर्गे पर प्रस्थान को अशुभ घोषित किया है। हाथी पर सवारी करके देवी के आगमन से जल की वर्षा/भारी वृष्टि होगी। मुर्गे पर सवारी करके देवी के जाने से प्रजा को कष्ट तथा राष्ट्रों/राज्यों में युद्ध या विग्रह होता है।

।। मा ।।

।। या देवि सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।

–: संधिपूजा मुहूर्त्त :–

प्रथमा	+	द्वितीया	–	शैलपुत्री	+	ब्रह्मचारिणी	–	29 सितम्बर रात्रि में 08:12 PM पर
द्वितीया	+	तृतीया	–	ब्रह्मचारिणी	+	चंद्रघण्टा	–	30 सितम्बर को शाम में 04:54 PM पर
तृतीया	+	चतुर्थी	–	चंद्रघण्टा	+	कुष्माण्डा	–	01 अक्टूबर को अपराह्न में 01:55 PM पर
चतुर्थी	+	पंचमी	–	कुष्माण्डा	+	स्कन्दमाता	–	02 अक्टूबर को दिन में 11:45 AM पर
पंचमी	+	षष्ठी	–	स्कन्दमाता	+	कात्यायनी	–	03 अक्टूबर को पूर्वाह्न 10:15 AM पर
षष्ठी	+	सप्तमी	–	कात्यायनी	+	कालरात्रि	–	04 अक्टूबर को सुबह में 09:40 AM पर
सप्तमी	+	अष्टमी	–	कालरात्रि	+	महागौरी	–	05 अक्टूबर को सुबह में 09:47 AM पर
अष्टमी	+	नवमी	–	महागौरी	+	सिद्धिदात्री	–	06 अक्टूबर को दिन में 10:56 AM पर

माता जगदम्बा का हाथी पर आगमन

नोट :– नवरात्र में संधि पूजन करने का विशेष महत्व है। अगर प्रत्येक दिन न कर सकें, तो आखिरी तीन दिनों का अवश्य करना चाहिए। इस बार प्रत्येक तिथियों की संधि सामान्यतः पूजन के साधारण समय में ही पड़ रही है। अतः पूजन करने के लिए कोई विशेष समय सामंजस्य (Adjust) नहीं करना पड़ेगा। अतः चाहें तो आप सभी दिनों की संधि पूजा संपन्न कर सकते हैं।

संधि पूजन के नियम एवं सावधानियाँ - जिस दिन की संधि पूजा हो, उस दिन की दोनों देवियों का (एक जो जा रही हैं, दूसरी जो आ रही हैं), ध्यान एवं आवाहन मंत्र पढ़ कर देवी के चरणों में, यंत्र पर अथवा कलश पर पंचोपचार पूजन संपन्न करना चाहिए। अथवा संक्षेप में पुष्प + अक्षत भी अर्पण कर सकते हैं। पाँच आचमनी जल अवश्य प्रदान करें।

अगर पाठ या हवन लगातार कर रहे हैं और उस समय संधि पूजन का समय आ जाए तो पाठ या हवन रोकना उचित नहीं है। यह लगातार चलते रहना चाहिए। इसी में संधि पूजा को समाहित मान लिया जाता है। हाँ, अगर मंत्र जप हो रहा हो तो वह माला सुमेरु तक पूरी कर रोकी जा सकती है और संधि पूजन करने के उपरांत पुनः माँ से आज्ञा लेकर जप प्रारंभ कर सकते हैं।

–: कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त्त :–

29 सितम्बर 2019 को सुबह में 05:44 AM से 07:06 AM तक (पटना में)

(कुल 1 घंटा 22 मिनट तक)

: कलश स्थापना के लिए अभिजीत मुहूर्त्त :

29 सितम्बर 2019 को दोपहर में 11:16 AM से 12:03 PM तक (कुल 47 मिनट तक)

नोट :– कलश स्थापना यद्यपि दिन भर हो सकता है, लेकिन अभिजीत मुहूर्त्त का विशेष महत्व है। अतः इसमें ही कलश स्थापना को प्रधानता दी जानी चाहिए। इसके अलावा अगर किसी अन्य समय में कलश स्थापना करनी हो तो चौघड़िया से शुभ मुहूर्त्त देखकर ही करनी चाहिए। इसमें काल, रोग और उद्वेग के समय को अशुभ माना गया है। अतः इन्हें छोड़ देना चाहिए। अमृत, शुभ, चर और लाभ के समय में ही घट स्थापना का शुभ कार्य करें। चर समय में किया गया कार्य स्थिर नहीं होता। अतः मेरे विचार से इसे भी छोड़ देना चाहिए। इसलिए चौघड़िया के संपूर्ण जानकारी हेतु प्रथमा तिथि की योग्य चौघड़िया नीचे दिया गया है।

संक्षेप में 21 सितम्बर 2019 को कलश स्थापना हेतु अन्य शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार है :–

1. सुबह में 07:13 AM से 08:42 AM तक – चर की चौघड़िया (न्यूट्रल)
2. सुबह में 08:42 AM से 10:11 AM तक – लाभ की चौघड़िया
3. सुबह में 10:11 AM से 11:40 AM तक – अमृत की चौघड़िया (वारवेला)
4. दोपहर में 01:09 PM से 2:37PM तक – शुभ की चौघड़िया

नोट :- कलश स्थापना हेतु चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग का निषेध किया जाता है। अतः चित्रा नक्षत्र के पहले ही कलश स्थापना करना उचित होता है। अगर प्रथमा के दिन ही चित्रा नक्षत्र हो तो इस नक्षत्र के निकल जाने के बाद ही कलश स्थापना किया जाता है। ज्योतिष शास्त्रों में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में कलश स्थापना से सभी प्रकार की हानि बतायी गयी है। इस बार 29 सितम्बर 2019 को ब्रह्मा योग का निर्माण हो रहा है, जो कि बहुत ही शुभ है एवं चित्रा नक्षत्र का आगमन शाम में 07:12 PM से हो रहा है। अतः कलश स्थापना पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

—: बिल्व निमंत्रण मुहूर्त्त :—

दिनांक 03 अक्टूबर 2019 (पंचमी) को अपराह्न 15:10 PM से 05:31 PM तक (कुल 2 घंटा 21 मिनट तक)

(षष्ठी तिथि के प्रवेश करने पर ही बिल्व अभिमंत्रण का कार्य होगा।)

बिल्व वृक्ष में देवी पार्वती एवं लक्ष्मी का वास माना जाता है। सप्तमी तिथि को बिल्व फल पर पूजन के पश्चात् ही देवी के प्रतिमा का पट खोला जाता है। इसके लिए ऐसे बिल्व फल को लिया जाता है, जो एक ही डंठल में दो की संख्या में हो। षष्ठी की शाम में इनको निमंत्रण देकर सप्तमी की सुबह में इन्हें लाया जाता है और संपूर्ण पूजन कर देवी की प्रतिमा का पट खोल दिया जाता है।

—: देवी प्रतिमा का पट खुलने का निर्णय :—

देवी की प्रतिमा सप्तमी तिथि में ही खुलनी चाहिए। दिनांक 05 अक्टूबर को सुबह में 09:47 AM तक ही सप्तमी तिथि है। अतः इसके पहले ही मूर्त्ति की प्राण-प्रतिष्ठा, नयन उद्‌बोधन एवं दर्पण दर्शन हो जाना चाहिए। इसके अलावा ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि 05 ता0 को सुबह के 09:47 AM से लेकर रात्रि में 10:22 PM तक भद्रा भी है। भद्रा में सभी शुभ कार्य वर्जित है। इसके अलावा चौघड़िया मुहूर्त्त का भी ध्यान देना चाहिए। इसलिए सप्तमी तिथि के लिए 05 अक्टूबर के चौघड़िया का भी नीचे उल्लेखित कर रहा हूँ।

मूल नक्षत्र में 05 ता॰ के दिन में 1:18 PM तक है। लेकिन सप्तमी तिथि 09:47 AM तक ही और इसके बाद भद्रा भी है। अतः इस समय में माता का पट नहीं खुल सकता। इसके लिए एक दिन पहले ही अर्थात् षष्ठी तिथि को 4 अक्टूबर को सप्तमी तिथि और मूल नक्षत्र के आने पर ही देवी का आवाहन करना उचित होगा। 4 ता0 को दिन में 09:41 AM से सप्तमी का प्रवेश है दिन में अपराह्न 12:19 PM से मूल नक्षत्र का आगमन है। अतः इसके बाद किसी शुभ मुहूर्त्त में शाम में देवी का नयन उद्‌बोधन अर्थात् पट खुल सकता है। इसके लिए 4 अक्टूबर 2019 की चौघड़िया नीचे दी जा रही है।

—: देवी के पट खुलने का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त :—

दिनांक 04 अक्टूबर 2019 को 03:09 PM से 05:30 PM तक (2 घंटा 21 मिनट)

नवीन प्रतिमा के प्राण-प्रतिष्ठा हेतु विशेष ध्यान देने योग्य तथ्य :- जब भी देवी या अन्य किसी भी देवता के प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा करें, तो प्राण-प्रतिष्ठा के मंत्रों को पढ़ने के बाद सर्वप्रथम उनकी दृष्टि किसी नये दर्पण पर ही पड़नी चाहिए एवं उनकी आँखों में चाँदी की शलाका से शुद्ध शहद लगाना चाहिए, ताकि उनकी आँखों में मधुरता आए और नयन कमलों से करुणा बरसे। इसके पश्चात् ही मूर्त्ति को जन-सामान्य के दर्शनों के लिए खोलनी चाहिए।

—: सप्तमी तिथि में माता महासरस्वती के पूजन का अति शुभ मुहूर्त्त :—

दिनांक 05 अक्टूबर 2019 को पू०षा० नक्षत्र में 03:08 PM से 05:29 PM तक (2 घंटा 20 मिनट तक)

—: महानिशा पूजा :—

अष्टमी एवं नवमी की मिलन रात्रि में। अर्थात् 06 अक्टूबर की रात्रि में 11:00 PM से रात्रि के 3 बजे तक। सामान्यतः महानिशा पूजा अष्टमी एंव नवमी की संयोग रात्रि में ही किया जाता है। रात्रि पूर्व सप्तमी एवं अष्टमी की मिलन रात्रि में किया जाता दायक होता है और देवी का साक्षात दर्शन भी संपन्न करवाता रखता है।

अगर अष्टमी एवं नवमी का मिलन दिन में हो रहा हो, तो एक है। इस समय का किया गया पूजन एवं मंत्र जप बहुत ही सिद्धि है। इस समय का पूजन मंत्र साधकों के लिए विशेष महत्व

चूंकि सप्तमी एवं अष्टमी तिथि का मिलन भी दिन में ही हो रहा है। अतः महानिशा पूजन के लिए 6 अक्टूबर की रात्रि ही उचित है।

—: विशेष संधि पूजा मुहूर्त्त :—

दिनांक 06 अक्टूबर 2019 (रविवार) को सुबह में 10:30 AM से 11:18 AM तक (48 मिनट)

—: महानवमी तिथि को हवन करने का मुहूर्त्त :—

दिनांक 07 अक्टूबर 2019 को सुबह के 5:48 AM से शाम के 5:28 PM तक (कुल 11 घंटा 40 मिनट तक)

महानवमी के हवन में अगर संभव हो तो देवी के 1000 नामों (सहस्रनाम) से अवश्य होम करना चाहिए। जिन लोगों ने सप्तशती के अध्यायों का पाठ किया है, उन्हें प्रत्येक अध्याय के विशेष हवन मंत्रों से हवन कर पूर्णता प्रदान करनी चाहिए। नवार्ण मंत्र का हवन तो आवश्यक है ही। इसके अलावा दुर्गा सप्तशती के अन्य मंत्रों से भी हवन करना चाहिए।

ॐ

–: महानवमी तिथि को बलिदान एवं शस्त्र पूजा करने का मुहूर्त्त :–

बलिदान :– दिनांक 07 अक्टूबर 2019 को अपराह्न 12:47 PM से 15:07 PM तक (कुल 2 घंटा 20 मिनट तक)

शस्त्र पूजा :– दिनांक 07 अक्टूबर 2019 को अपराह्न 13:34 PM से 14:20 PM तक (46 मिनट तक)

देवी के पूजा की पूर्णता बलिदान देने में है। सात्विक साधना पद्धति में साधक नारियल, नींबू, भूरा कुम्हरा (भतुए), ईख या अन्य किसी फल की बली देते हैं। कुछ लोग पशु बली भी करते हैं। होना तो यह चाहिए कि हमें अपने अहंकारों एवं दुर्गुणों की बलि का संकल्प लेना चाहिए। खैर तांत्रोक्त पूजन पद्धति में बलि की विधि एक सामान्य परिपाटी है। आमतौर पर हवन के बाद ही बलि दिया जाता है। जिन लोगों का हवन उपरोक्त दिए गए समय से पहले पूर्ण हो गया हो, वे इस समय में बलि विधान संपन्न कर सकते हैं। जिन लोगों का हवन कार्य संपन्न नहीं हुआ हो, वे हवन कार्य पूर्ण होने के बाद किसी भी समय कर सकते हैं।

यह बलिदान मुहूर्त्त उन लोगों के लिए है, जो संकल्प लेकर केवल पशुबली या अन्य फलों की बलि करते हैं। प्रत्येक देवताओं के बलि का विशेष मंत्र होता है। यहाँ मैं देवी दुर्गा एवं काली के बलि हेतु विशेष मंत्रों का उल्लेख कर रहा हूँ, जिसका बलि के समय पढ़कर बलि देने से वे स्वयं ग्रहण करती हैं। सामान्यतः भगवान शिव या माता शक्ति के पूजन के समय इन पाँच प्रमुख गणों को अवश्य बलि दी जाती है - भैरव, योगिनी, क्षेत्रपाल, गणपति एवं पंच महाभूत। इन पाँचों के लिए भी बलि का विशेष मंत्र आगे उल्लेखित किया गया है।

तांत्रोक्त पूजन के अंत में उच्छिष्ट चाण्डाल एवं चाण्डालिनी को भी बलि प्रदान की जाती है। तांत्रोक्त हवन के अंत में भैरव एवं क्षेत्रपाल को पलाश के पत्ते पर दही एवं काले उड़द की बलि दी जाती है, जिसे माष बलि कहा जाता है। मैं कलश स्थापना एवं सप्तमी के दिन भी नींबू की बलि प्रदान करता हूँ। महानवमी को नींबू के अलावा नारियल एवं भतुए की भी बलि प्रदान की जाती है।

–: दुर्गा विसर्जन (कलश विसर्जन) का मुहूर्त्त :–

दिनांक 08 अक्टूबर 2019 को सुबह में 05:48 AM से 08:08 AM तक (2 घंटा 20 मिनट)

–: शांति पूजा का निर्णय :–

इस बार शांति पूजा को लेकर किसी भी प्रकार का संशय नहीं है। आमतौर पर नवरात्र के बाद शांति पूजा आश्विन माह की पूर्णिमा तिथि को ही किया जाता है। पूर्णिमा तिथि सूर्योदय के समय से ही दिनांक 13 अक्टूबर को है। अतः इसी दिन शांति पूजा संपन्न होगी।

दिनांक 13/10/2019 (रविवार) - शरद पूर्णिमा, कोजागिरी व्रत, व्रत की पूर्णिमा एवं रास पूर्णिमा, कुमार/आश्विनी पूर्णिमा, कार्त्तिक स्नान व्रत नियमादि प्रारंभ, शरद उत्सव, स्नान दान प्रारंभ एवं महर्षि वाल्मिकी जयंती।

पूर्णिमा तिथि 12 अक्टूबर की रात्रि में 12:35 AM से 13 अक्टूबर की रात्रि में 02:40 AM तक है।

–: सर्वार्थ सिद्धि एवं अमृत सिद्धि योग :–

दिनांक 2 अक्टूबर 2019 (बुधवार) को दिन में 12:55 PM से 3 तारीख के दिनांक 12:06 PM तक सर्वार्थ सिद्धि योग बन रहा है। इन दो दिनों में नवरात्र की चतुर्थी एवं पंचमी तिथि भी पड़ रही है। इसी प्रकार 2 अक्टूबर को अमृत सिद्धि योग भी है, जो कि दिन में 12:55 PM से लेकर रात्रि के अंत तक रहेगा। अर्थात् इस दिन दो महायोग हैं, सर्वार्थ सिद्धि एवं अमृत सिद्धि योग। सर्वार्थ सिद्धि योग अगले दिन तक रहेगा और अमृत सिद्धि योग उसी रात्रि में समाप्त हो जाएगी।

इसी प्रकार दिनांक 6 अक्टूबर 2019 (रविवार) को दिन में अपराह्न 03:05 PM से रात्रि के अंत तक सर्वार्थसिद्धि योग है। इस दिन महाष्टमी भी है। समस्त शाक्त साधकों को इस दिन दोहरा लाभ मिलेगा। एक नवरात्र की महाष्टमी एवं उसी दिन सर्वार्थसिद्धि योग का।

सर्वार्थ सिद्धि एवं अमृत सिद्धि योग होने के कारण इस दिन किया गया सभी प्रकार के जप एवं हवन का विशेष फल मिलेगा, शीघ्र ही सिद्धिदायक होगा। महामृत्युंजय मंत्र की शीघ्र सिद्धि होगी। इस दिन बनाया गया सभी प्रकार के आध्यात्मिक यंत्रों की सिद्धि शीघ्र होगी। अगर कोई गंभीर संकट में है, तो उसके नाम से किया गया जप एवं हवन इत्यादि शीघ्र ही सफलतादायक होगा। सर्वार्थ सिद्धि योग में मंत्रार्थियों को कार्यसिद्धि मंत्र, नवार्ण मंत्र या देवी लक्ष्मी का कोई भी मंत्र इत्यादि अवश्य सिद्ध करना चाहिए। आयुर्वेद के जानकारों या चिकित्सकों को इस दिन जीवन रक्षक औषधियों का निर्माण अवश्य करना चाहिए। इस दिन पूजा करने से रुके एवं बिगड़े हुए सभी कार्य बनते हैं। नाम से ही स्पष्ट है सभी प्रकार के कार्यों को सिद्ध करने वाला सर्वार्थ सिद्धि योग। इसी प्रकार अमृत सिद्धि योग में सभी प्रकार के आध्यात्मिक कार्यों में, उपासनाओं में, तंत्र सिद्धियों में नवजीवन भरा जाता है। आपने कोई मंत्र कभी सिद्ध किया। कुछ समय तक उससे लाभ प्राप्त किया, किंतु अब उससे अपेक्षित लाभ नहीं प्राप्त हो रहा है, तो अमृत सिद्धि योग में किया गया वह जप आपके तंत्र उपासना, आध्यात्मिक साधना में नया प्राण फूंकेगा। उसे प्रकृति द्वारा अमृत तत्व की प्राप्ति होगी।

—: सामिष भोजन करने का निणर्य :—

मुझे खुद पर शर्म लग रहा है कि मैं इस बेतुके एवं अपवित्र विषय पर क्यों इन अति पवित्र पृष्ठों में लिख रहा हूँ। लेकिन क्या करूँ ? जिस प्रकार संपूर्ण प्राणियों के हितों की रक्षा हेतु स्वयं देवाधिदेव महादेव भगवान शंकर ने विष पी डाला और संपूर्ण प्राणियों की जननी आदिशक्ति जगदम्बा को भी दैत्यों का रक्तपान करना पड़ा था, उसी प्रकार मुझे भी अपने शिष्यों, मित्रों एवं शुभचिंतकों के धर्म की एवं धार्मिक हितों की रक्षा हेतु इस निंष्ट विषय पर लिखना पड़ रहा है। अतः धर्म प्रेमी लोग कृपा कर क्षमा करें।

आमतौर पर जो मौसमी भक्त होते हैं, वे नवरात्र के पवित्र नौ दिनों में मांसाहार एवं अन्य तामसी स्वभाव वाले भोजन का परित्याग करते हैं और दशमी के दिन से पुनः माता के प्रसाद के नाम पर मांसाहार का भक्षण करते हैं और इसका समर्थन भी करते हैं। इस बार दशमी तिथि **मंगलवार** को पड़ रही है और बहुत-से लोग मंगलवार को भी मांसाहार से परहेज करते हैं। इसके विकल्प के रूप में अगले दिन बुधवार को वे मांसाहार का प्रयोग करेंगे। लेकिन यहीं पर उनसे महापाप हो जाएगा। क्योंकि बुधवार को **एकादशी तिथि** है और आश्विन मास के शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि को **'पापांकुशा एकादशी'** कहा जाता है। अर्थात् **पाप पर अंकुश** लगाने वाली तिथि। सभी धर्म प्रेमी हिन्दू जानते हैं कि एकादशी तिथि को मांस-मछली खाना तो दूर, चावल, बैगन और उड़द की बड़ी छूना भी पाप माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन व्यक्ति चावल के जितने दाने खाता है, उतने वर्षों तक उसे नरक के कीड़े के रूप में जन्म लेना पड़ता है। एकादशी के दिन किया गया तामसी भोजन पूरे साल भर के किए गए सभी पुण्यकर्मों का नाश करता है। एकादशी एवं पूर्णिमा के दिन तो भूलकर भी तामसी भोजन का स्मरण नहीं करना चाहिए। इस दिन (09/10/2019) एकादशी तिथि सूर्योदय से लेकर शाम में 05:23 PM तक है। अतः नवरात्र में अर्जित किए गए अपने पुण्यकर्मों के नष्ट नहीं होने के लिए कृपया **बुधवार (एकादशी तिथि)** को भूलकर भी मांस-मछली या अन्य तामसी भोजन का परित्याग करें। अगले दिन गुरुवार होने के कारण भी बहुत सारे लोग मांस-मछली नहीं खायेंगे। अतः मेरे विचार से मांसाहार के लिए शुक्रवार का दिन (दिनांक 11/10/2019) लिया जा सकता है।

—: विशेष जानकारी : नवपत्रिका पूजन में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न पत्ते :—

देवी मंदिरों में, शक्तिपीठों में बिल्व फल पूजन के पश्चात् नवपत्रिका पूजन भी किया जाता है। ये पत्ते निम्नलिखित हैं :-

1. केला का पत्ता 2. दारुहल्दी का पत्ता 3. हल्दी का पत्ता 4. जयंती का पत्ता 5. बेल का पत्ता 6. अनार का पत्ता 9. अशोक का पत्ता 8. धान का पत्ता और 9. अमलतास का पत्ता।

—: दीक्षा संस्कार :—

दीक्षया तत्पदम् आप्नुयात : दीक्षा से ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।

-: भौतिक दीक्षायें :-	-: आध्यात्मिक दीक्षायें :-
1. सर्वबाधा निवारण दीक्षा	1. ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
2. ऋण मुक्ति दीक्षा	2. तंत्र बाधा निवारण दीक्षा
3. दुर्घटना नाशक दीक्षा	3. ज्योतिषज्ञान प्राप्ति दीक्षा
4. मनोकामना सिद्धि दीक्षा	4. पितृदोष निवारण दीक्षा
5. शीघ्र विवाह दीक्षा	5. योग सिद्धि दीक्षा
6. पुत्र/संतान प्राप्ति दीक्षा	6. इष्ट दर्शन दीक्षा
7. मुकदमों में सफलता प्राप्ति दीक्षा	7. महाविद्या सिद्धि दीक्षा
8. ग्रहबाधा दोष निवारण दीक्षा	8. महाकाली दीक्षा
9. गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा	9. गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
10. रोग मुक्ति दीक्षा	10. स्वतः भाग्य लेखन दीक्षा
11. भ्रम निवारण दीक्षा	11. कालज्ञान दीक्षा
12. विद्या प्राप्ति दीक्षा	12. साधना साफल्य दीक्षा
13. अकाल मृत्यु निवारण दीक्षा	13. जगदम्बा सिद्धि दीक्षा
14. तीव्र भाग्योदय दीक्षा	14. ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा
15. सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा	15. महामृत्युंजय दीक्षा
16. यश प्राप्ति दीक्षा	16. मंत्र/तंत्र/यंत्र सिद्धि दीक्षा
17. गृह क्लेश निवारण दीक्षा	17. वाणी सिद्धि दीक्षा
18. दाम्पत्य जीवन साफल्य दीक्षा	18. प्रेत बाधा निवारण दीक्षा
19. शत्रु बाधा निवारण दीक्षा	19. सम्मोहन प्राप्ति दीक्षा
20. मंगली दोष निवारण दीक्षा	20. आत्म उन्नति दीक्षा
21. व्यापार वृद्धि दीक्षा	21. कालसर्प योग निवारण दीक्षा

नोट :- उपरोक्त सभी दीक्षायें मूल गुरु दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही क्रियाशील होंगी। बिना गुरु दीक्षा संपन्न करवाये आध्यात्मिक जगत में प्रवेश संभव ही नहीं है।

ॐ

–: कुछ प्रमुख तिथियों की चौघड़िया :–

दिनांक 29.09.2019 की चौघड़िया (प्रथमा)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:41 – 07:10 उद्वेग	17:39 – 19:09 शुभ
07:10 – 08:40 चर	19:09 – 20:39 अमृत
08:40 – 10:10 लाभ	20:39 – 22:10 चर
10:10 – 11:40 अमृत	22:10 – 23:40 रोग
11:40 – 13:09 काल	23:40 – 25:10+ काल
13:09 – 14:39 शुभ	25:10+ – 26:40+ लाभ
14:39 – 16:09 रोग	26:40+ – 28:11+ उद्वेग
16:09 – 17:39 उद्वेग	28:11+ – 29:41+ शुभ

दिनांक 04.10.2019 की चौघड़िया (षष्ठी)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:49 – 07:16 काल (काल वेला)	17:25 – 18:58 लाभ (काल रात्रि)
07:16 – 08:43 शुभ	18:58 – 20:31 उद्वेग
08:43 – 10:10 रोग	20:31 – 22:04 शुभ
10:10 – 11:37 उद्वेग	22:04 – 23:37 अमृत
11:37 – 13:04 चर	23:37 – 25:10+ चर
13:04 – 14:31 लाभ (वार वेला)	25:10+ – 26:43+ रोग
14:31 – 15:58 अमृत	26:43+ – 28:16+ काल
15:58 – 17:25 काल (काल वेला)	28:16+ – 29:49+ लाभ (काल रात्रि)

दिनांक 06.10.2019 की चौघड़िया (अष्टमी)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:49 – 07:16 उद्वेग	17:24 – 18:57 शुभ
07:16 – 08:43 चर	18:57 – 20:30 अमृत
08:43 – 10:10 लाभ	20:30 – 22:04 चर
10:10 – 11:36 अमृत (वार वेला)	22:04 – 23:37 रोग
11:36 – 13:03 काल (काल वेला)	23:37 – 25:10+ काल
13:03 – 14:30 शुभ	25:10+ – 26:43+ लाभ (काल रात्रि)
14:30 – 15:57 रोग	26:43+ – 28:16+ उद्वेग
15:57 – 17:24 उद्वेग	28:16+ – 29:49+ शुभ

दिनांक 07.10.2019 की चौघड़िया (नवमी)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:49 – 07:16 अमृत	17:23 – 18:56 चर
07:16 – 08:43 काल (काल वेला)	18:56 – 20:30 रोग
08:43 – 10:10 शुभ	20:30 – 22:03 काल
10:10 – 11:36 रोग	22:03 – 23:36 लाभ (काल रात्रि)
11:36 – 13:03 उद्वेग	23:36 – 25:10+ उद्वेग
13:03 – 14:30 चर	25:10+ – 26:43+ शुभ
14:30 – 15:56 लाभ (वार वेला)	26:43+ – 28:17+ अमृत
15:56 – 17:23 अमृत	28:17+ – 29:50+ चर

प्रस्तुतिः- **श्री अभिषेक कुमार** (महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ)
(श्रीविद्या के महा-आचार्य, महाविद्याओं के सिद्ध साधक, मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ, शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता, ज्योतिषाचार्य, हस्तरेखाशास्त्री एवं वास्तुशास्त्री, इस्लामी यंत्रों के विशेष जानकार)
शक्ति अनुसंधान केन्द्र, मो0– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी, पटना–8.
Mob:- 9852208378, 9525719407 E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

दिनांक 08.10.2019 की चौघड़िया (विजयादशमी)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:50 – 07:16 रोग	17:22 – 18:56 काल
07:16 – 08:43 उद्वेग (वार वेला)	18:56 – 20:29 लाभ (काल रात्रि)
08:43 – 10:09 चर	20:29 – 22:03 उद्वेग
10:10 – 11:36 लाभ (वार वेला)	22:03 – 23:36 शुभ
11:36 – 13:02 अमृत (काल वेला)	23:36 – 25:10+ अमृत
13:03 – 14:29 काल (काल वेला)	25:10+ – 26:43+ चर (काल रात्रि)
14:29 – 15:56 शुभ	26:43+ – 28:17+ रोग
15:56 – 17:22 रोग	28:16+ – 29:50+ काल

दिनांक 13.10.2019 की चौघड़िया (पूर्णिमा – शांति पूजा)	
दिन की चौघड़िया	**रात की चौघड़िया**
05:52 – 07:18 काल (काल वेला)	17:25 – 18:58 लाभ (काल रात्रि)
07:16 – 08:43 शुभ	18:58 – 20:31 उद्वेग
08:43 – 10:10 रोग	20:31 – 22:04 शुभ
10:10 – 11:37 उद्वेग	22:04 – 23:37 अमृत
11:37 – 13:04 चर	23:37 – 25:10+ चर
13:04 – 14:31 लाभ (वार वेला)	25:10+ – 26:43+ रोग
14:31 – 15:58 अमृत	26:43+ – 28:16+ काल
15:58 – 17:25 काल (काल वेला)	28:16+ – 29:49+ लाभ (काल रात्रि)

–: प्रत्येक दिन के राहु काल एवं यमगण्ड का विवरण :–

प्रत्येक दिन प्रत्येक ग्रहों के लिए समय निर्धारित होता है, अर्थात् प्रत्येक ग्रहों का बारी-बारी से समय आता है। इसी प्रकार राहु का समय आता है, जिसे राहु काल कहा जाता है। इस राहु काल में सभी प्रकार के शुभ कार्य वर्जित होते हैं, क्योंकि इस समय आरंभ किया गया सभी कार्य सर्प के मुख में चला जाता है। राहु को सर्प का अधिपति माना जाता है। लेकिन इस राहु काल में देवी दुर्गा की पूजा-अर्चना या मंत्र जप करने का विशेष महत्व है। राहु काल में देवी की आराधना से विशेष सिद्धि प्राप्त होती है। दुर्गा पूजन हेतु राहु काल के इसी महत्व को जानकर मैं प्रत्येक दिन के राहु काल का विवेचन कर रहा हूँ, जो कि डेढ़ घंटे का होता है। आशा है, आप सभी साधक गण इससे लाभ प्राप्त करेंगे। यमगण्ड में भी सभी प्रकार के शुभ कार्य वर्जित रहते हैं। अतः इनका भी उल्लेख कर रहा हूँ।

राहु काल	यमगण्ड
रविवार – सायं 4:30 PM से सायं 6:00 PM तक	रविवार – दोपहर में 12:00 PM से 1:30 PM तक
सोमवार – प्रातः 7:30 AM से प्रातः 9:00 AM तक	सोमवार – सुबह में 10:30 AM से दिन में 12:00 PM तक
मंगलवार – दिन में 3:00 PM से शाम में 4:30 तक	मंगलवार – दिन में सुबह 9:00 AM से 10:30 AM तक
बुधवार – दिन में 12:00 PM से दोपहर 1:30 PM तक	बुधवार – प्रातः 7:30 AM से प्रातः 9:00 AM तक
गुरुवार – दोपहर में 1:30 PM से अपराह्न 3:00 PM तक	गुरुवार – प्रातः 6:00 AM से 7:30 AM तक
शुक्रवार – सुबह में 10:30 AM से दिन में 12:00 PM तक	शुक्रवार – दिन में 3:00 PM से शाम में 4:30 PM तक
शनिवार – दिन में सुबह 9:00 AM से 10:30 AM तक	शनिवार – दोपहर में 1:30 PM से अपराह्न 3:00 PM तक

नोट :– यह संपूर्ण ज्योतिषीय मुहूर्त एवं कालगणना निर्णय भारतवर्ष में प्रचलित विभिन्न पंचांगों, कम्प्यूटर के आधुनिक सॉफ्टवेयर एवं इंटरनेट के समग्र एवं सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् किया गया है, जो कि 99.5% तक पूर्णतः शुद्ध कहा जा सकता है। विशेषकर इसमें श्री विश्व हिन्दू पंचांग एवं drikpanchang की विशेष सहायता ली गयी है।

विशेष उपदेश :– वह ज्ञान जिसमें भक्ति नहीं है, वह अहंकार है और जिस भक्ति में ज्ञान नहीं है, वह कोरा अंधविश्वास मात्र है। भक्ति एवं ज्ञान के समन्वय से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है एवं व्यक्ति परम आध्यात्मिक ज्ञान तथा सिद्धि को प्राप्त होता है – **श्री अभिषेक जी।**

दो टूक :– प्रत्येक साल न जाने कितने तेल–पानी पढ़ने वाले बाबा लोग बरसाती कीड़े की तरह आते और चले जाते हैं, लेकिन परमपूज्य गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी एवं उनके शिष्यों की सत्ता सदा अक्षुण्ण एवं अखण्ड रूप से बनी रहती है। पता नहीं लोग क्यों सदा प्रकाश देने वाले सूर्य को छोड़कर चार दिन की चांदनी के पीछे भागते हैं। ❄ ❄ ❄

"जल ही जीवन है – ऋग्वेद" जल बचायें, जीवन बचायें।

जो व्यक्ति जल (पानी) का अनावश्यक दुरुपयोग करता है, बर्बादी करता है, उसकी सात पीढ़ियाँ नरक में जाती हैं एवं वह रौरव नरक में अनंत समय तक यातना भोगता है। जिन घरों में नलों से पानी व्यर्थ में बहता रहता है, बर्बाद होता है, उस घर से धन-संपदा, विद्या-बुद्धि, धर्म एवं आयु एक-एक कर के नष्ट होते चले जाते हैं और अंत में उस घर के लोग नरकगामी होते हैं। पानी की एक-एक बूंद कीमती है। इसकी रक्षा करें।

संयोग :- वर्ष 1828 में कलकत्ता में 'ब्रह्म समाज' की स्थापना हुई और उसी साल पटना के मारूफगंज में 'श्री श्री बड़ी देवी जी पूजा समिति' की स्थापना हुई। मूर्त्तिपूजा एवं हिन्दू धर्म के अन्य सिद्धांतों का विरोध करने वाले ब्रह्म समाज का आज कोई नामलेवा भी नहीं बचा है, जबकि मारूफगंज में आज भी अखण्ड रूप से 'श्री श्री बड़ी देवी जी' की प्रतिमा स्थापित हो रही है और उनसे ही प्रेरणा लेकर अनेक छोटी-बड़ी पूजा समितियाँ भी माता दुर्गा की प्रतिमा स्थापित कर रही हैं। यही है, वास्तविक प्रोंतिक धर्म, माता की वास्तविक शक्ति एवं मूर्ति पूजा का चमत्कार। झूठे धर्मों एवं आधे-अधूरे सिद्धांतों का माता रानी सदा ही खण्डन करती हैं एवं शक्ति ही सर्वोच्च है, इस सनातन सत्य का जयघोष अपने भक्तों द्वारा करवाती है। 'दीन-ए-इलाही' धर्म चलाने एवं इस्लाम के सिद्धांतों की सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए ध्यानू भगत के घोड़े का सिर काटने वाले अकबर द्वारा चलाया गये धर्म का उस समय भी कोई महत्ता स्थापित नहीं हुई, किंतु ज्वाला देवी, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में आज भी माता की दिव्य ज्योति प्रज्वलित है।

–: देवियों को बलि चढ़ाने की विधि :–

माता जगदम्बा की पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करने के बाद पाँच पीले नींबू या कोई अन्य रसीले फल लेकर इस मंत्र को कहकर माता के चरणों में चढ़ा देने चाहिए – **ॐ श्री जगदम्बायै दुर्गा देव्यै च महाकालिकायै, महालक्ष्म्यै, महासरस्वत्यै देव्यै नमो नमः, महाबलि हेतु नींबू/अमुक फलं समर्पयामि।**

अब चढ़ाये गए फल की सिंदूर, अक्षत एवं पुष्प से पूजा करें। अब फलों की बलि हेतु चाकू या तलवार इत्यादि देवी को अर्पित करें, इस मंत्र से –

ॐ श्री जगदम्बायै दुर्गा देव्यै च महाकालिकायै, महालक्ष्म्यै, महासरस्वत्यै देव्यै नमो नमः, महाबलि हेतु महाखड्गम् समर्पयामि।

ध्यान दें :- बलि हेतु जो भी फल लें वे बेदाग हों एवं कहीं से भी कटे-फटे, कीड़ों के खाये हुए न हों। ऐसे फल त्याज्य हैं। जिस नारियल से स्वयं फूट कर पानी रिस रहा हो, वह भी त्याज्य है। नारियल या भतुआ एक भी चढ़ाया जा सकता है। चढ़ाये गए नारियल या भतुए को पूजन करने के बाद लाल कपड़े या लाल धागे से लपेट देना चाहिए। हवन करने के बाद नींबू की बलि देवी के पाँच प्रमुख गणों के मंत्रों को पढ़ कर चढ़ानी चाहिए एवं आरती, प्रदक्षिणा, पुष्पांजली एवं नमस्कार समर्पण हो जाने के बाद नारियल अथवा भतुए की बलि स्वयं जगदम्बा के मंत्रों को पढ़ कर चढ़ानी चाहिए। तत्पश्चात् क्षमा प्रार्थना कर देवी के बायें हाथ में अथवा श्री चरणों में संपूर्ण पूजन कर्म समर्पण कर दया एवं कृपा के लिए आशीर्वाद मांगना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए। अगर नवमी के दिन नवरात्र व्रत पूर्ण हो रहा हो, तो देवी के कलश को अपने स्थान से दाहिनी ओर तीन बार घुमाकर मंत्र विसर्जन करना चाहिए तथा पुष्प एवं अक्षत समर्पण कर पुनः अगले साल आने की प्रार्थना करनी चाहिए।

बलि में जो स्वाहा का मंत्र है, उस पर आकर फलों को काट देना चाहिए अथवा नारियल को एक ही बार में फोड़ देना चाहिए। बलि का संक्षिप्त अर्थ है एक बार में ही पूर्ण समर्पण।

ततो बलिदानम्

ईशान–वायु–नैर्ऋत्याऽग्निकोणेषु क्रमेण बटुक–योगिनी–क्षेत्रपाल–गणपतिभ्यो बलिं दद्यात् – (देवी के पूजन स्थान में क्रम से ईशान कोण, वायव्य कोण, नैर्ऋत्य कोण एवं अग्नि कोण में बटुक भैरव, योगिनी, क्षेत्रपाल तथा गणपति को बलि चढ़ानी चाहिए। यह बलि ऐसी भावना करके देवी के प्रतिमा या कलश के सामने किसी पात्र या पत्थर पर रखकर भी दी जा सकती है।)

ईशाने–

एहि एहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, बटुकाय एष बलिर्न मम्।

वायव्ये –

यां यीं यूं यैं यौं यः योगिनीभ्यो नमः – (इति योगिनीः पूजयित्वा सामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा – इस मंत्र से योगिनी की पूजा कर नींबू पर आचमनी से सामान्यर्घ्य का जल प्रदान करें।)

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा, दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा, पाताले वा, तले वा, सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा।। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन, प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः।। सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा, योगिनीभ्यः एष बलिर्न मम्।। (इस मंत्र से योगिनियों के लिए बलि समर्पण करें।)

इति जलं दत्वा प्रणमेत्। (पुनः जल देकर प्रणाम करें।)

नैर्ऋत्ये –

क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालबलिमण्डलाय नमः, क्षेत्रपाल बलिद्रव्याय नमः। इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य, सामान्यार्घ्योदकं गृहीत्वा (क्षेत्रपाल की गंध, पुष्प एवं सामान्यर्घ्य के जल से पूजा करें।)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, क्षेत्रपालाय एष बलिर्न मम्।

आग्नेये –

गं गणपतये नमः, गणपतिबलिमण्डलाय नमः, इति गन्धपुष्पैः, सम्पूज्य, सामान्यार्घ्योदकमादाय, (गणपति की गंध, पुष्प एवं सामान्यर्घ्य के जल से पूजा करें।)

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः, गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, गणपतये एष बलिर्न मम्। (इति जलं दत्वा प्रणमेत– जल देकर प्रणाम करें)

उत्तरे –

पूर्वक्त् मण्डलं विधाय, सम्पूज्य, साधारं बलिं निधाय, तत्र सर्वदेवताः सम्पूज्य, ऐं ह्रीं क्लीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। (इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो बलिं दद्यात् – इस मंत्र से सभी पंचमहाभूतों को बलि प्रदान करें।)

देवी काली को बलि प्रदान करने का मंत्र :–

ऐं ह्रीं ऐह्येहि जगन्मातर्जगतां जननि गृहण गृहण बलिं सिद्धिं देहि देहि शत्रु क्षयं कुरु कुरु हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ॐ कालिकायै नमः फट् स्वाहा॥

(नोट :- इस मंत्र से केवल माता काली के महाकाली, दक्षिणकाली एवं भद्रकाली स्वरूपों को ही बलि दी जाती है। कामकला काली, श्मशान काली या गुह्य काली के बलि हेतु अन्य मंत्र होते हैं।)

माता दुर्गा एवं दुर्गा सप्तशती में वर्णित सभी देवियों को बलि चढ़ाने का मूल मंत्र –

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

(नोट :- इस मंत्र से केवल माता दुर्गा, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती एवं दुर्गा सप्तशती में वर्णित सभी देवियों को बलि अर्पित की जाती है। किंतु इस मंत्र से देवी तारा, बगलामुखी, छिन्नमस्तिका या धूमावती देवी को बलि नहीं अर्पण की जा सकती है। इस मंत्र को तीन बार पढ़ते हुए जब तीसरे बार का स्वाहा आए, तब एक ही बार में नारियल फोड़ देना चाहिए अथवा भतुए को विच्छेद कर देना चाहिए। नारियल का जल देवी-देवताओं एवं स्वयं पर छिड़क लें। बलि किए गए सामग्री पर बलि के पश्चात् जल अवश्य छोड़ना चाहिए एवं सिंदूर/रोली लगा देना चाहिए। अगर नारियल की बलि किए हों, तो उसका एक भाग देवी को समर्पित करना चाहिए और शेष भाग को प्रसाद के रूप में ग्रहण करें। लेकिन इसके अलावा अगर किसी अन्य चीज की बलि जैसे, पुष्प, नींबू, भतुआ या कोई फल तो उसे संपूर्ण रूप में ही देवी को अर्पण करें, स्वयं ग्रहण न करें। हाँ, अनार की बलि में उसके एक भाग का रस प्राप्त किया जा सकता है।)

उच्छिष्टभैरव ध्यान – **ॐ गदात्रिशूलडमरूपाशहस्तम् त्रिलोचनम्। कृष्णाभं भैरवं देवं ध्यायेदुच्छिष्टभैरवम्।।**

उच्छिष्टभैरव बलि मंत्र – **ॐ उच्छिष्टभैरव एहि एहि बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा। इति दत्वा तदबलिम् उत्थापय पूजागृहबहिर्भूमौ चतुरस्रमण्डलं कृत्वा, कृष्णसारमेयं समाहूय, बलिं दद्यात् बटुकवाहन इमां पूजां बलि च गृह्ण गृह्ण स्वाहा।**

इति जलमुत्सृज्य, हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य, गृहान्तः प्रविश्य, आसनमुपविश्य, आचम्य, शान्तिस्तवं पठेत्।

पुनः उच्छिष्टचाण्डालिनीं ध्यात्वा – **ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालिनि मातङ्गि (मातंगि) सर्वजनवशंकरि इमां पूजां बलिं च गृह्ण गृह्ण स्वाहा। इति निर्माल्य सहितं नैवेद्योच्छिष्टबलिं दद्यात्।**

नोट :- तांत्रोक्त आवरण पूजन के अंत में उच्छिष्ट भैरव एवं उच्छिष्ट चाण्डालिनी को बलि प्रदान की जाती है। अर्थात् पूजन कर्म के पश्चात् जो उसका कुछ हानिकारक तत्व हो, उसका परिमार्जन अथवा निर्माल्य बचा हो, उसका भी संपूर्ण रूप से उपयोग। इसके लिए पूजन स्थान के बाहर भूमि पर जल से चौकोर मण्डल बना कर उसमें किसी पात्र की स्थापना कर उच्छिष्ट भैरव एवं उच्छिष्ट चाण्डालिनी के मंत्र पढ़कर उसमें मुख्य पूजन की थाली में जो पुष्प एवं जल हैं उसमें से थोड़ा-थोड़ा लेकर उस पात्र में डाल दें। इस प्रकार उच्छिष्ट भैरव एवं उच्छिष्ट चाण्डालिनी को बलि प्रदान की जाती है।

—: अथ श्री कलश स्थापना विधि :—

अब मैं यहाँ कलश स्थापना की संपूर्ण विधि लिख रहा हूँ। आमतौर पर बस इसकी जानकारी के अभाव होने के कारण अच्छे- अच्छे समर्पित साधकों को पंडितों के आगे-पीछे करना पड़ता है, उनकी चिरौरी करनी पड़ती है। पटना के एक विख्यात आश्रम के द्वारा प्रकाशित पत्रिका अथवा बाजार में बिकने वाले अन्य आध्यात्मिक पत्रिकाओं में भी कलश स्थापना की विधि दी हुई रहती है, किंतु उसमें आधी-अधूरी जानकारी रहती है, शास्त्रों द्वारा प्रमाणित मंत्र नहीं रहते हैं। यह विधि पूर्णतः शास्त्रोक्त है और समझ में आने लायक भाषा में है। अतः इससे कोई भी सामान्य या नया साधक भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कलश स्थापन के स्थान में पूजन के पहले गंधादि से अष्टदल कमल बनाकर उस पर कलश स्थापित करना चाहिए। नवरात्र में मिट्टी के ऊपर जौ बोकर उस पर कलश स्थापना किया जाता है। कुछ विशेष तंत्र साधनाओं में, जैसे श्री यंत्र की उच्चतम सिद्धि या छिन्नमस्तिका पूजन या श्मशान भूमि में भद्रकाली पूजन में घटिका-अर्गला यंत्र बनाकर उस पर कलश स्थापना तांत्रिक लोग करते हैं। कलश पर देवी के सामने वाले भाग में रोली या सिंदूर से त्रिशूल का तथा अपनी ओर वाले भाग पर **ॐ** या **卐** का निशान बना लेना चाहिए। कुछ लोग देवी के विभिन्न बीज मंत्रों जैसे- **ऐं**, **ह्रीं**, **क्लीं**, **श्रीं** भी लिखते हैं। अगर आप कलश पर मिट्टी लगाकर उस पर जौ बोते हैं, तो फिर ये मंत्र लिखे जाने की आवश्यकता नहीं है।

गणपति पूजन के बाद सर्वप्रथम अपने सामने पूजन की चौकी के नीचे जमीन पर कलश स्थापित करें। देवियों के पूजन में कलश स्थापना का विशेष महत्व है। नवरात्रि पूजन में जो कलश स्थापित किया जाता है, वह दो प्रकार से स्थापित किया जाता है। एक चौमुखी दीपक का, जो पूरे नवरात्र अखण्ड रूप से प्रज्वलित रहता है, दूसरा नारियल का। एक प्रसिद्ध देवी के साधक ने मुझे बताया था कि नारियल वाला कलश वैष्णवी पूजन पद्धति का प्रतीक है और दीये वाला कलश शाक्त एवं शैव पूजन पद्धति का। वामाचार एवं तंत्र विद्या इसी दीपक वाले कलश के द्वारा सिद्ध होगी। नारियल वाला कलश दक्षिणमार्गी एवं भक्तिमार्गी पूजन के लिए ठीक है। इसके लिए एक पानी वाला नारियल जो जटा सहित एवं बेदाग हो लेना चाहिए। इस पर लाल वस्त्र लपेट लेना चाहिए। जिस जगह पर कलश स्थापित करना हो, वहाँ रोली से अष्टदल कमल बनाकर उस पर कुछ पुष्प की पंखुड़ियाँ बिखेर दें। एक मिट्टी या किसी पवित्र धातु जैसे तांबे/पीतल का कलश उस पर स्थापित करें। अष्टदल किस प्रकार बनेगा, इसका रेखाचित्र नीचे दिया गया है।

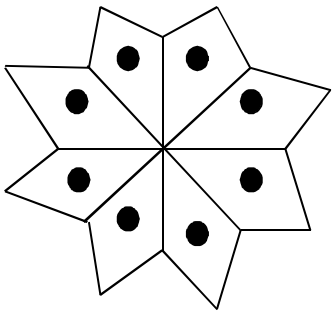

अष्टदल कमल

नवरात्र में सामान्यतः जो लोग नौ दिनों के लिए कलश स्थापना करते हैं, वे कलश के नीचे मिट्टी एवं गंगा जी का बालू बिछाकर उस पर जौ बो देते हैं। इसे जयंती कहा जाता है। कलश पर भी गिली मिट्टी लगाकर उस पर जौ बोया जाता है। जौ बोने के बाद उसे महीन लाल एकरंगे कपड़े से कस कर बांध दिया जाता है। जौ केवल मिट्टी से बने कलश पर ही लपेटा जाता है, धातु के कलश पर नहीं। धातु के कलश के नीचे ही, मिट्टी पर जौ बोकर काम चलाया जाता है। मेरा मानना है कि नवरात्र में उच्चतम कलश स्थापना के लिए एक मिट्टी का और एक धातु का कलश होना सर्वोत्तम है। जिस कलश पर मिट्टी नहीं लगाया गया हो, उसके एक तरफ रोली या सिंदूर को पानी से गीला करके त्रिशूल का निशान अपनी अनामिका अंगुली की सहायता से बनाएं, जो माता की तरफ रहे। अपने ओर के भाग पर '**ॐ**' या स्वस्तिक '**卐**' का निशान बनायें। बहुत से लोग बीजमंत्रों को भी लिखते हैं। यहाँ मैं विभिन्न देवी/देवताओं के लिए किस बीज मंत्र का उपयोग उपयुक्त होगा, यह उल्लेख कर रहा हूँ।

माता सरस्वती के लिए अथवा बुद्धि-विद्या विकास के लिए — **ऐं**

माता जगदम्बा के मूल स्वरूप अथवा दुर्गा देवी के लिए - **ह्रीं**

कामाकर्षण अथवा वशीकरण/सम्मोहन सिद्धि के लिए कामरूपा काली का बीज मंत्र :- **क्लीं**

माता लक्ष्मी के लिए - **श्रीं**

श्री गणेश जी के लिए - **ॐ** अथवा **गं**

माता बगलामुखी के लिए - **ह्लीं**

माता तारा के लिए - **स्त्रीं**

दक्षिण काली अथवा माता काली के किसी भी स्वरूप के लिए - **क्रीं**

नोट :— **ॐ** एवं **卐** का प्रयोग सामान्यतः किसी भी देवी-देवता के पूजन में किया जाता है। केवल अतिउग्र स्वरूपों को छोड़कर जैसे-धूमावती, छिन्नमस्तिका अथवा कालभैरव इत्यादि।

1. **भूमि स्पर्श** – ॐ विश्वाधारासि धरणी शेषनागोपरि स्थिता। धृता चादिवराहेण सर्वकामफलप्रदा।।
2. **कलशस्पर्श** – ॐ हेमरूपादि सम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम्। कलशं धौतकल्माषं छिद्रवर्णविवर्जितम्।।
3. **कलश में जल** – ॐ जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकम्। बींज सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम्।
4. **सूत्र लपेटें** – ॐ सूत्रं कार्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। येन बद्धं जगत्सर्वं वेष्टनं कलशस्य च।। (कलश के कंठ में मौली लपेटें अथवा कलश के चारों ओर कपड़ा बांधें।)
5. **सर्व औषधि** – ॐ ओषधिः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तथा। दूर्वासर्षपसंयुक्ता सर्वौषध्यः पुनातु माम्।। (कलश के जल में एक चुटकी हवन सामग्री डालें)
6. **पुष्प** – ॐ विविधपुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्धनम्। क्षिप्तं यत्कार्यसम्भूतं कलशे निक्षिपाम्यहम्।। (कलश के जल में एक या अधिक पुष्प डालें)
7. **पञ्च पल्लव** – ॐ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधपल्लवास्तथा। पञ्च ते पल्लवाः प्रोक्ताः कलशे निक्षिपाम्यहम्।। (कलश में पांच, सात, नौ या ग्यारह आम के पत्ते डंठल सहित डालें)
8. **पञ्चरत्न** – ॐ कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्। एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।। (कलश के जल में पंचरत्न अथवा कोई भी एक रत्न या उपरत्न डालें)
9. **पूंगीफल** – ॐ पूंगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापशोधनम्। पुत्रसौख्यादिफलदं कलशे निक्षिपाम्यहम्।। (कलश के जल में एक डंठल सहित छुट्टा पान, एक इलायची, दो लौंग तथा एक छोटी सुपारी प्रदान करें।)
10. **हिरण्य** – ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम्।। (कलश में एक तांबे या चांदी का सिक्का अथवा प्रचलित सिक्का प्रदान करें)
11. **सप्तमृतिका** – ॐ अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमात् ह्रदात्। राजद्वाराच्च गोगोष्ठाद् मृदमानीय निक्षिपेत्।। (कलश के जल में एक चुटकी गंगा अथवा अन्य पवित्र नदियों की मिट्टी प्रदान करें।)
12. **पूर्णपात्र** – ॐ विधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम्। पूर्णस्तु कलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि।। (कलश पर रोली अथवा हल्दी से रंगे हुए चावल से भरा हुआ ढकनी अथवा कटोरी रखें)
13. **श्री फल** – ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण। सर्वलोकं म इषाण। (नारियल में लाल अथवा पीले वस्त्र लपेट कर पूर्णपात्र पर रखें)
14. **कलश पर दीप प्रज्वलन मंत्र** – ॐ दीप ज्योतिषे नमः। (इस मंत्र से कलश पर के दीप को प्रज्वलित करें।)

    दीप प्रज्वलन करने के बाद नीचे लिखा मंत्र पढ़ते हुए दीप ज्योति को अभिमंत्रत करें। अर्थात् उसमें अग्नि देव एवं सूर्य के तेज की भावना करें। इसके लिए दीप को भी रोली, अक्षत, सिंदूर एवं पुष्प पंखुड़ियों से पूजन करें और प्रज्वलित ज्योति पर पुष्प से जल का छींटा प्रदान करें।

    ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।
15. **वरूण आवाहन** – ॐ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपिरवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ, स्थापयामि पूजयामि। (हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर इस मंत्र को पढ़ते हुए कलश में वरुण देव का आवाहन करें)
16. **देवआवाहन** – ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।। कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।। कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदाऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।। अङ्गै श्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकाराकाः। (हाथ में फूल एवं अक्षत लेकर कलश में सभी देवताओं का आवाहन करें)

(इसके बाद यज्ञकर्ता को चाहिए कि कलश अधिष्ठित आवहित देवताओं को पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन करें।)

प्रार्थना – ॐ देवदानव संवादे मथ्यमाने महादधौ। उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।

शिवां स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।

सान्निधयं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा। प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम्।।

{यह मैंने कलश स्थापना की आसान, संक्षिप्त एवं तांत्रिक विधि दी है। जो लोग वैदिक मंत्रों से और भी विस्तार से कलश स्थापना करना चाहें, वे गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'दैनिक पूजा विधि-विधान' पुस्तक का प्रयोग कर सकते हैं। उसमें कलश स्थापना की संपूर्ण विस्तृत विधि पेज नं.-202 पर दी गयी है। इसी प्रकार षोडशमातृका पूजन तथा सप्तघृत मातृका पूजन पेज नं.-221-225 तक दी गयी है। माता दुर्गा का संपूर्ण पूजन पेज नं.-154 पर दी गयी है।}

।। अथ श्री दुर्गासप्तशती पाठ एवं हवन विधि।।

दुर्गासप्तशती का संपूर्ण हिंदु समाज में अत्यंत ही आदरणीय स्थान प्राप्त है। इसे साक्षात् श्री दुर्गादेवी का सम्पूर्ण विग्रह ही माना जाता है। नवरात्र में इसका पाठ करने का बहुत अलौकिक महत्व है। वैसे तो इसके सम्पूर्ण तेरहों अध्याय का पाठ एक दिन में करना अति उत्तम होता है। लेकिन अगर यह संभव न हो तो इसे दिन के अनुसार खंड करके भी पाठ किया जाता है।

पाठ विधि – अपना सामान्य पूजन करने के बाद गुरु मंत्र इत्यादि जपने के बाद श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करें। दुर्गासप्तशती पुस्तक को लाल वस्त्र में लपेटकर एक चौकी पर लाल कपड़े पर नौ दिनों के लिए स्थापित करें।

सर्वप्रथम इस मंत्र से पुस्तक की पंचोपचार पूजा करें अथवा सिंदुर, अक्षत एवं फूल चढायें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।

इसके बाद दुर्गासप्तशती का पाठ प्रारंभ करने से पहले संकल्प करना चाहिए। संकल्प करने के पश्चात शापोद्धार करना चाहिए।

शापोद्धार मंत्र :– शापोद्धार करने के लिए यह मंत्र सात बार पाठ के प्रारंभ एवं अंत में पढ़ें।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरू कुरू स्वाहा।

उत्कीलन मंत्र :– उत्कीलन करने के लिए इस मंत्र को पाठ के आदि एवं अंत में इक्कीस–इक्कीस बार पढ़ें।

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिके उत्कीलनं कुरू कुरू स्वाहा।

मृतसंजीवनी मंत्र :– उत्कीलन मंत्र पढ़ने के पश्चात् मृतसंजीवनी मंत्र का पाठ के प्रारंभ एवं अंत में सात–सात बार पाठ करें।

ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनी विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।

इसके बाद सप्तशती शाप विमोचन करना चाहिए। इस मंत्र का पाठ के प्रारंभ में ही 108 बार जप कर लेना चाहिए, अंत में नहीं।

सप्तशती शाप विमोचन मंत्र :– **ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।**

अथवा रुद्रयामल महातंत्र के अंर्तगत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिका शाप विमोचन मंत्रों का आरम्भ में ही पाठ करना चाहिए। यह संपूर्ण बीस मंत्र आपको दुर्गा सप्तशती पुस्तक में मिल जायेंगे।

पाठ करने का नियम

सर्वप्रथम इस प्रकार नीचे दिये गए क्रम से पाठ करें।

1. सप्तश्लोकी दुर्गा
2. श्री दुर्गाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्
3. दुर्गाद्वात्रिंशनाममाला
4. देव्याः कवचम्
5. अर्गला स्तोत्रम्
6. कीलकम्
7. तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम
8. श्री देव्यथर्वशीर्षम् का पाठ करें।
9. इसके बाद नवार्ण विधि करके अर्थात् न्यास, ध्यान करके नवार्ण मंत्र का एक माला या अधिक जप करें।
10. इसके बाद सप्तशती न्यास करें।

11. अध्याय का पाठ करें। (अगर तेरहों अध्याय का पाठ एक साथ कर सकें, तो अति उत्तम, नहीं तो दिन के हिसाब से करें, जिसका नियम नीचे दिया गया है।

12. अध्याय के पाठ के बाद पुनः न्यास इत्यादि करेंगे, जिसका विवरण उपसंहार में दिया गया है।

13. अध्याय के पाठ के बाद तंत्रोक्तं देवीसूक्तम का पाठ करें। इसके बाद

14. सिद्ध कुंजिका स्तोत्र 15. देव्यापराधक्षमापन स्तोत्रम् 16. क्षमा प्रार्थना करें।

(दुर्गा सप्तशती का पाठ प्रातः काल में ही करें। यदि रात्रि काल में भी पाठ करें, तो शापोद्धार करके पाठ कर सकते हैं। 15 वें नंबर का देव्यापराधक्षमानस्तोत्रम् का पाठ आप अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।) दुर्गा सप्तशती के पाठ के बाद आप हवन करें तथा उसके बाद आरती संपन्न करें।

दिन के हिसाब से अध्याय पाठ

जो लोग एक दिन में संपूर्ण पाठ नहीं कर सके, वे प्रत्येक दिन के हिसाब से भी अध्याय पाठ कर सकते हैं। नवरात्र कुल नौ दिनों का है। इसलिए इसी क्रम से पाठ करना उचित होगा।

पहला दिन	–	प्रथम अध्याय
दूसरा दिन	–	द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय
तीसरा दिन	–	पाँचवा अध्याय
चौथा दिन	–	छठा एवं सातवाँ अध्याय
पाँचवा दिन	–	आठवाँ एवं नौवाँ अध्याय
छठा दिन	–	दसवाँ एवं ग्यारहवाँ अध्याय
सातवाँ दिन	–	बारहवाँ अध्याय
आठवाँ दिन	–	तेरहवाँ अध्याय
नौवाँ दिन	–	प्राधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य एवं मूर्त्ति रहस्य

नोट :– अध्याय समाप्त होने पर इति, वध, अध्याय तथा समाप्त शब्द का उच्चारण नहीं करना चाहिए। ऐसा उच्चारण करने से देवी रुष्ट होती हैं। बल्कि ऐसा कहना चाहिए– **श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमहात्मने प्रथमः ॐ तत्सत्।**

इसी प्रकार द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः इत्यादि कहकर समाप्त करना चाहिए।

अध्याय का हवन विधि एवं मंत्र

श्री दुर्गासप्तशती के प्रत्येक अध्याय का हवन भी नवरात्र के दिनों में किया जाता है। इसकी विधि इस प्रकार है।

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय समाप्त करने के पश्चात् एक समूचे पान पर शाकल्य घी में भीगोंकर रखें। उसके साथ में एक कमलगट्टा, एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल एवं शहद ये सभी चीजें रहें। श्रुचि (लकड़ी का एक विशेष पात्र में रखकर खड़े होकर मंत्र बोलें।)

ॐ सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठायै महाकालिकायै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा। – को बोलते हुए हवन कुण्ड में डालें।

द्वितीय अध्याय

एक पान पर शाकल्य रखें, जैसे एक कमलगट्टा, एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची एवं गुग्गुल। ये सभी वस्तुएं श्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति दें।

ह्रीं सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै सप्तविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रयै नमः महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

तृतीय अध्याय

आहुति में सामग्री वही है। केवल गुड़ विशेष है। एवं मंत्र भी द्वितीय अध्याय का है।

ह्रीं सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै सप्तविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रयै नमः महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

चतुर्थ अध्याय

एक पान पर शाकल्य जैसे एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल, मिश्री और पायस श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष मिश्री एवं पायस ही है।

ह्रीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सपरिवारायै श्री महालक्ष्म्यै सप्तविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रयै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

पंचम अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल, कर्पूर, पुष्प और ऋतुफल रखें। सभी चीजें श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से महाऽऽहुति दें। इसमें विशेष कर्पूर, पुष्प और ऋतुफल ही है।

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सपरिवारायै धूम्राक्ष्यै विष्णु मायादि चतुर्विंश देवताभ्यो महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

षष्ठम् अध्याय

एक पान पर ाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल और भोजपत्र सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष भोजपत्र ही है।

क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

सप्तम् अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल और जायफल सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष जायफल ही है। निम्न मंत्र बोलें।

ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली चामुण्डादेव्यै कर्पूरबीजाधिष्ठात्रयै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

अष्टम् अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल और लालचंदन सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष लालचंदन है। निम्न मंत्र बोलें।

ॐ जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै रक्तक्ष्यै अष्ट मातृ संहितायै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

नवम् एवं दशम् अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल, एक बेल फल और सुमेनफल सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष लालचंदन है। निम्न मंत्र बोलें। (बेल फल सूखा वाला ही लें)

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारा देव्यै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

एकादश अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल पुष्प और पायस सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष पुष्प और पायस है। निम्न मंत्र बोलें।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रयै गरूड़वाहिन्यै नारायणी देव्यै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

द्वादश अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल ऋतुफल और एक केला सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से आहुति दें। इसमें विशेष ऋतुफल और केला है। निम्न मंत्र बोलकर आहुति दें।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वर प्रदायै वैष्णवी देव्यै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा।

त्रयोदश अध्याय

एक पान पर शाकल्य– एक कमलगट्टा घी में भीगोंकर एक सुपाड़ी, दो लौंग, एक छोटी इलायची, गुग्गुल एक फल और एक फूल सभी चीजों को श्रुचि में रखकर खड़े होकर मंत्र से महाऽऽहुति दें। इसमें विशेष एक फल एवं फूल है। निम्न मंत्र बोलकर आहुति दें।

ॐ क्लीं जयन्ती सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री विद्यायै महाऽऽहुति समर्पयामि् नमः स्वाहा। इसके बाद निम्नोक्त मंत्र से घृत की आहुतियाँ दें।

ॐ घृत घृतपावानः पिवतवसां वसापावानः पिवतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशः आदिशेत्विदि्दिशऽउदि्दशो दिग्भ्यः स्वाहा।

इसके बाद श्रीसूक्त हवन, स्वष्टिकृत होम, दिक्पाल, भैरव पूजा, बलिदान कराकर ज्वारों की पूजा कराने का विधान है। अंत में पूर्णाऽहुति करके यज्ञ विभूति लें। श्री मार्कण्डेय पुराण में 600 मंत्रों से आहुति देने का वर्णन मिलता है। (अगर अध्याय का हवन प्रत्येक दिन न कर पाएं तो उसे केवल अंतिम दिन या महानवमी के हवन में भी संपन्न किया जा सकता है।)

नवार्ण मंत्र : दुर्गा की नव शक्तियाँ नव ग्रहों को नियंत्रित करती हैं।

नवरात्र में नवार्ण मंत्र, दुर्गा की नवशक्तियों को जागृत एवं सक्रिय कर नव ग्रहों को एक साथ नियंत्रित करता है। जिससे साधक, उपासक, अराधक की काल स्थिति पक्ष में बनती है, तथा सभी प्रकार की समस्याओं का निदान एवं मनोनुकूल कार्यों की सफलता दुर्गा की नवशक्तियों द्वारा संपन्न की जाती है। नवार्ण मंत्र – ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, संयुक्त रूप से है, मगर जब हम इसका संधि–विच्छेद करते हैं, तो इसमें नव अर्ण (अक्षर) पृथक पृथक रूप से पाये जाते हैं, यथा – (1) ऐं (2) ह्रीं (3) क्लीं (4) चा (5) मु (6) ण्डा (7) यै (8) वि (9) च्चे – जिसमें आधा अक्षर स्वतः लोप हो जाता है, जिसकी गणना नहीं की जाती है। नवार्ण में नव अक्षरों का नव दुर्गा नाम, नवदुर्गा की शक्तियों से संबंध है, तथा इन नव शक्तियों का संबंध नव ग्रहों से है। इस तरह नवार्ण मंत्र की उत्पन्न इन्फ्रासोनिक ध्वनि तरंगे तथा अल्ट्रासोनिक ध्वनि तरंगें सर्वप्रथम दुर्गा की नव शक्तियों को जागृत करती हैं तथा ये नव शक्तियां जागृत होने के बाद क्रिया रूप में सक्रिय होकर नवग्रहों को नियंत्रित करने लगती हैं। जब ये नव शक्तियां जागृत होकर तथा सक्रिय होकर नवग्रहों को नियंत्रित करती हैं, तब नियंत्रण के प्रभाव से ये नवग्रह अपने दुष्प्रभावी शक्तियों को स्वतः समाप्त कर देते हैं। तदोपरांत साधक, उपासक, आराधक को सुप्रभावी शक्तियां ग्रहों की ओर से मिलने लगती हैं तथा दूसरी ओर दुर्गा की नवशक्तियों की ईश्वरीय कृपा प्राप्त होने लगती हैं, जिसका परिणाम होता है कि आराधक की सारी विध्न–बाधायें समाप्त हो जाती हैं और आराधक मनोवांछित फल प्राप्त करने लग जाता है।

नवार्ण मंत्र का संबंध पृथक–पृथक जिन–जिन शक्तियों से है, और जिन शक्तियों का सबंध पृथक–पृथक रूप से नवग्रहों से है, हम उनका वर्णन् इस प्रकार से कर रहे हैं, यथा –

(1) ऐं का संबंध दुर्गा की प्रथम शक्ति शैलपुत्री से है, और उनका संबंध सूर्य ग्रह से है।
(2) ह्रीं का संबंध दुर्गा की द्वितीय शक्ति ब्रह्मचारिणी से है, और उनका सबंध चंद्र ग्रह से है।
(3) क्लीं का संबंध दुर्गा की तृतीय शक्ति चंद्रघण्टा से है और उनका संबंध मंगल ग्रह से है।
(4) चा का संबंध दुर्गा की चतुर्थ शक्ति कुष्माण्डा से है और उनका संबंध बुध ग्रह से है।
(5) मुं का संबंध दुर्गा की पंचम शक्ति स्कन्दमाता से है और उनका संबंध गुरु ग्रह से है।
(6) डा का संबंध दुर्गा की छठी शक्ति कात्यायनी से है और उनका संबंध शुक्र ग्रह से है।
(7) यै का संबंध दुर्गा की सप्तम् शक्ति कालरात्रि से है और उनका संबंध शनि ग्रह से है।
(8) वि का संबंध दुर्गा की अष्टम् शक्ति महागौरी से है और उनका संबंध राहु से है।
(9) च्चे का संबंध दुर्गा की नवीं शक्ति सिद्धिदात्री से है और उनका संबंध केतु से है।

इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए विस्तृत जानकारी के लिए नवार्ण मंत्र के प्रत्येक नव अक्षरों से पृथक–पृथक दुर्गा की नव शक्तियां नवग्रहों को कैसे नियंत्रित कर रही हैं, कृपया चित्र को गौर पूर्वक देखें। स्थिति स्वतः स्पष्ट हो जाएगी।

दुर्गा सप्तशती में यह मंत्र इस प्रकार वर्णित है – **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।** इस नवार्ण मंत्र के शुरूआत में ॐ लगा हुआ है। यह ॐ सृष्टि, पालन एवं संहार की शक्ति से निहित है और परातत्व का प्रकाशक है। ॐ के उच्चारण से अतीन्द्रिय शक्तियां सवंर्द्धित होती हैं। इसलिए नवार्ण मंत्र को और शक्तिशाली एवं प्रभावकारी बनाने के लिए ॐ का प्रयोग विद्वानों ने किया है। मगर किसी प्रकार की शंका नहीं हो इसके लिए स्पष्ट किया जाता है कि आराधक अपनी इच्छानुसार नवार्ण मंत्र का प्रयोग ॐ लगाकर

भी कर सकते हैं, तथा ॐ का उच्चारण नहीं करके भी नवार्ण मंत्र का जाप कर सकते हैं, दोनों का फल समान रूप से मिलता है। ॐ विजयादशमी का प्रतीक है। नवरात्र में नव शक्तियों तथा नवग्रहों की सम्पूर्ण सफलता का जय–विजय, विजयादशमी तिथि ही माना गया है।

आदि भाक्ति भगवती दुर्गा के समीप कलश स्थापित कर, नौ मिट्टी का घी युक्त दीपक नौ दिन प्रज्वलित करें। प्रत्येक प्रज्वलित दीपक के सामने पीला चावल से अलग–अलग नव शक्तियों तथा शक्तियों से संबंधित ग्रहों का नाम लिखें। तदोपरांत मंत्र से भगवती दुर्गा को अभिमंत्रित करें। उसके बाद नवों दिन माला से नौ माला नवार्ण मंत्र का जाप निम्न आवृति की आवाज में करें। ध्यान रहे कि षष्ठी पूजा से अष्टमी पूजा तक उच्च आवृति में नवार्ण मंत्र का जप हो।

तदोपरांत अष्टमी की रात्रि में पुनः मानसिक रूप से नौ माला जप करें। जप समाप्त होने के बाद जल युक्त नारियल की बलि नौ बार भगवती दुर्गा के सम्मुख दें। इस तरह नौ बार में नौ नारियल का बलि देना है। बलि देते समय **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं फट् स्वाहा,** बोलते हुए स्वाहा शब्द के साथ ही बलि देना है। बलि देने के बाद दुर्गा सप्तशती में वर्णित देव्यापराध क्षमापन स्तोत्र पढ़ते हुए प्रार्थना अवश्य करें। उसके बाद पुनः आदि शक्ति भगवती दुर्गा के दिव्य स्वरूप का चिंतन करते हुए ध्यानस्थ हो जाएं। ध्यान समाप्ति के बाद क्षमा प्रार्थना करें। क्षमा प्रार्थना के बाद आसन छोड़ दें। अष्टमी के पूरे रात्रि तक जागृतावस्था में रहें। क्योंकि अष्टमी की रात्रि में रात भर आदि शक्ति भगवती दुर्गा की नवों शक्तियां जागृत एवं क्रियाशील रहती हैं, जिससे उपासक, आराधक अतीन्द्रिय शक्तियों से लाभान्वित तथा प्रभावित होते रहता है।

इस विधि से नवार्ण मंत्र की उत्पन्न अल्ट्रासोनिक एवं इन्फ्रासोनिक ध्वनि तरंगों से प्रभावित होकर दुर्गा की नव शक्तियां, नव ग्रहों को अपने दिव्य आवरण में नियंत्रित करती हैं। इसी नियंत्रण के प्रभाव से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

कभी निष्फल नहीं होती श्रीयंत्र की आराधना

प्रश्न :- श्रीयंत्र को यंत्रों का राजा क्यों कहा गया है? इसमें दैहिक, दैविक व भौतिक दुःखों को दूर करने की शक्ति कैसे है?

उत्तर :- अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी दृश्य-अदृश्य है, उन सबका मूल स्थान श्रीयंत्र ही हे। शास्त्र कहते हैं कि 'श्रयते या सा श्रीः', अर्थात् जो परब्रह्म का आश्रयण करती है, वही श्री है। यंत्रम का अर्थ है, गृह, वास अथवा निवास। अतः जहाँ परब्रह्मपरमेश्वरी 'श्री' का वास है, वही गृह है। इससे सिद्ध होता है कि परब्रह्म एवं उनकी शक्ति का सम्यक् रूप ही श्रीयंत्र है। पौराणिक मान्यताओं में श्री 'यंत्र' शब्द गृह के लिए प्रयोग होता है। अतः यह विश्व ही श्रीविद्या का गृह है, जिसमें ब्रह्म एवं उनकी शक्ति परमेश्वरी एकाकार रूप में विद्यमान रहते हैं।

'चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पंचिभिः, शिवशक्त्यात्मकं श्वोयं श्रीचक्रम् शिवयोर्वपुः।' श्लोक के अनुसार मूलरूप से श्रीयंत्र नौ चक्रों, जिनमें पाँच शक्ति के और चार शिव के हैं-से बना हुआ तेजस्त्रयात्मक है। इनमें त्रिकोण, अष्टार, अंतर्दशार, बहिर्दशार और चतुर्दशार-ये पाँच अधोमुख त्रिकोण शक्तिचक्र हैं तथा बिंदु, अष्टदल, षोडशदल और चतुरस्र ये चार उर्द्धवमुख त्रिकोण शिव के हैं। 'यत्पिंडे तत् ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो पिंड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। पिंड यानी शरीर में इनका स्थान भ्रूमध्य-आज्ञाचक्र, लंबिका-इन्द्रयोनी, कंठ-विशुद्धि, हृदय-अनाहत, नाभि-मणिपुर, वस्ति-स्वाधिष्ठान, मूलाधार-मूलाधार और तदधोदेश -कुल हैं। इन्हें ही सृष्टिकर्त्ता, पालन एवं प्रलयकर्त्ता माना गया है। इनमें बिंदुचक्र शिव की मूल प्रकृति से बना होने के कारण प्राकृत स्वरूप है, शेष आठ चक्र प्रकृति-विकृति उभयात्मक हैं। बिंदु, त्रिकोण एवं अष्टार ये सृष्टिकर्त्ता चक्र हैं। अंतर्दशार, बर्हिदशार एवं चतुर्दशार पालनकर्त्ता है तथा अष्टदल, षोडशदल और सहस्रदल (भूपुर) ये संहारकर्त्ता चक्र हैं। बिंदुचक्र शिववास है, जहाँ शिव विश्राम करते हैं। इन्हीं बिंदुचक्र में सृष्टि की समस्त शक्तियाँ निहित हैं, जिनमें सभी कलाएं, सभी तत्व, पंचकोश, पंचवायु, पुरुषार्थ चतुष्टय, सभी ग्रह, उपग्रह, सभी ऋद्धियाँ-सिद्धया-सिद्धियाँ आदि वास करती हैं।

शास्त्रों के अनुसार जितने भी यंत्र हैं, उन सभी का प्रादुर्भाव श्रीयंत्र से ही हुआ है, इसलिए श्रीयंत्र की पूजा-आराधना करने से सभी यंत्रों का फल एक साथ मिल जाता है। इनकी पूजा के पश्चात् फिर किसी यंत्र की साधना शेष नहीं रहती। उससे भी बड़ी बात यह है कि इस यंत्र की आराधना निष्फल नहीं होती। यंत्र के इसी प्रभाव को ध्यान में रख कर स्वयं ब्रह्म ज्ञानियों ने इन्हें यंत्र राज कहा है।

नवरात्रि : निर्भय कन्या का शक्ति पर्व

देवी का अर्थ है निर्भयता व प्रकाश। निर्भयता और प्रकाश के मेल से ही जीवन सार्थक होता है। नवरात्रि में शक्ति और कन्या पूजन के महत्व को रेखांकित करता सूर्यकांत द्विवेदी का आलेख :-

शक्ति उपासना या नवरात्र में हम देवी भगवती के रूप में एक नारी शक्ति को साकार रूप देते हैं। देवी भगवती के कई रूप हैं। हर स्त्री में हम जगदंबा के दर्शन करते हैं। उनमें ही आद्या शक्ति का भाव शामिल करते हैं। इसलिए नवरात्रि के अवसरों पर हम कन्या पूजन करते हैं। लेकिन कन्या पूजन क्यों? देवी शक्ति स्त्री शक्ति क्यों? पुरुष शक्ति क्यों नहीं। देवी शास्त्र में स्त्री को प्रकृति तत्व कहा गया है। एक शक्ति हैं और एक शक्तिमान। समस्त देवों की शक्ति स्त्री है।

देवी यानी प्रकाश। शक्ति यानी भयमुक्त जीवन। देवी भगवती यही दोनों तत्व किसी न किसी रूप से हर स्त्री में देखना चाहती हैं। देवी शास्त्र में स्त्री या देवी का अर्थ है-निर्भय स्त्री। निर्भय स्त्री ही देवी है, जो असुरों का संहार कर दे, जो देवताओं का कल्याण कर दे। जो जगत की

जननती है, माँ है, वही शक्ति है। देवी सूक्तम में देवी भगवती अपने विभिन्न रूपों के दर्शन कराती हैं। देवी कवच के माध्यम से वह समस्त प्राणियों के लिए रक्षा कवच प्रदान करती हैं। देवी भगवती दो मुख्य बातें कहती हैं। एक अपने मन को स्थिर रखो। दूसरे, स्वस्थ रहो। स्वस्थ मन ही स्वस्थ तन है। जिनकी ये दोनों चीजें स्वस्थ हैं, वह शक्ति को प्राप्त करता है। शक्ति किसमें है? देवी कहती हैं कि शक्ति तो हरेक प्राणी में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। बुद्धि भी हरेक प्राणी में होती है। अच्छे-बुरे का ज्ञान भी सभी में होता है। मनुष्य केवल इसलिए अलग है, क्योंकि उसके पास विवेक है, जो दूसरे प्राणियों में नहीं है। दुर्गा सप्तशती के माध्यम से देवी भगवती शक्ति के आयाम स्थापित करती हैं।

जगत जननी के सामने दो विषय आते हैं। एक को संतान ने घर से निकाल दिया। एक का शत्रुओं ने राजपाट छीन लिया। दोनों ही व्याकुल हैं। कुछ समझ में नहीं आ रहा कि क्या करें? मन मानने को तैयार नहीं है कि संतान या शत्रु भी ऐसा कर सकते हैं क्या? अपनों ने छल किया। सब कुछ छीन लिया। यही जीवन की आवृत्ति शोक-दुःख-भय का कारण बनती है। यहीं पर देवी कहती हैं कि इस चित्त को संभालो। यह माया-मोह है। इससे बाहर निकलो।

दुर्गा सप्तशती में देवी के रूप :-ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री, शिवदूती, भीमादेवी, भ्रामरी, शाकम्भरी, आदिशक्ति और रक्तदन्तिका।

इसलिए होता है नवरात्रि में कन्या पूजन :- देवी एक शक्तिशाली स्त्री के रूप में अभिव्यक्त हैं। सिंह की सवारी है। अष्टभुजी हैं। शक्तिपुंज हैं, कल्याणी हैं, रुद्राणी हैं, सौभाग्य, आरोग्य प्रदायिनी हैं। दुर्गा सप्तशती के मध्यम चरित्र में सारे देवता मिलकर अपने तेज और शस्त्र प्रदान करके एक देवी का निर्माण करते हैं। यही देवी महिषासुर का वध करती हैं। उत्तर चरित्र में शुम्भ-निशुम्भ के आतंक से देवताओं को मुक्त करती हैं। देवासुर संग्राम में विजय प्राप्त करने के बाद उनका शक्ति मातृ, निद्रा, तृष्णा, क्षुधा और शांति के रूप में स्मरण किया जाता है। देवी भगवती पार्वती की देह से प्रकट होती हैं। यह सारी आवृत्तियाँ और वृत्तियाँ एक कन्या के रूप में देवी का निर्माण करती हैं।

पुराणों में स्त्री या कन्या का महत्व :- सृष्टि को चलाने के लिए एक स्त्री आवश्यक थी। इसलिए देवी पार्वती और भगवान शंकर का मांगलिक मिलन होता है। दोनों विवाह रचाते हैं। पुराणों में साठ दक्ष कन्याओं को उत्पन्न करने का उल्लेख मिलता है। वह सब देवों और ऋषियों की पत्नी हुईं। दक्ष का अर्थ है, दक्षता। यानी स्त्री को हर प्रकार से दक्ष बनाना। स्त्री में ही यह गुण ईश्वर प्रदत्त है कि वह एक समय में कई कार्य कर सकती है। इसलिए दक्ष उनके पिता हैं। साठ कन्याएं दक्ष की पुत्रियाँ। ऋग्वेद में दक्ष से अदिति का जन्म हुआ और अदिति से दक्ष। देवी भागवत पुराण में कन्या की पुष्टि के 10 स्तर कहे गए हैं। देवी शास्त्र में कांति, दीप्ति व कम् गुण एक नारी में माने गए हैं। यानी कामना करने वाली, देदीप्त और कार्य को गति देने वाली। इसलिए कन्या देवी का अवतार कही गयी है। इसलिए नवरात्रि कन्या व मातृ शक्ति की आराधना का पर्व है।

नौ तत्वों की प्राप्ति का व्रत

सनातन धर्म में नवरात्रि की मान्यता युगों-युगों से कायम है और पूरे वर्ष में कुल चालीस नवरात्रि का उल्लेख उपलब्ध होता है। इनमें पाँच नवरात्रि आज भी भारतीय समाज में प्रचलित हैं। प्रथम चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक वासंतिक नवरात्रि, दूसरा आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक गुप्त नवरात्रि, तीसरा आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक शारदीय नवरात्रि, चौथा पौष मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक पौष नवरात्रि और पाँचवा माघ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक माघ नवरात्रि। लेकिन इन नवरात्रियों में वासंतिक नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि का विशेष मान है। इन दोनों में भी शारदीय नवरात्रि को सर्वाधिक सिद्धिदायक माना गया है।

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास व तमाम तरह के कष्ट से मुक्ति और सफल जीवन का पाठ पढ़ाने वाले नवरात्रि के नौ दिनों में देवी के नौ रूपों-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री की पूजा-अर्चना की जाती है। शास्त्रों के अनुसार नवरात्रि व्रत से सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं। यह व्रत विद्या, बुद्धि, यश, बल, वैभव, धन, राज्य, संतान व मोक्ष जैसे नौ तत्वों को सहज ही प्रदान करता है।

शारदीय नवरात्रि शुद्धता, शुचिता और आत्ममंथन का महापर्व है, जिसकी शुभ शुरुआत पितृ अमावस्या के बाद होती है। पहले 15 दिनों का पितृपक्ष, फिर नौ दिनों का मातृपक्ष। बहुत से लोग नवरात्रि व्रत किसी मान्यताप्रद देवी तीर्थ में संपन्न करते हैं। घर में नवरात्रि करने वाले स्थान चयन, घट स्थापना, मूर्त्ति स्थापना, अखण्ड दीपक, सुबह-शाम पाठ, कुमारी कन्या पूजन जैसे अनुष्ठान जरूर करते हैं।

देवी पुराण में वर्णन मिलता है कि बिना संयम, सिद्धि और संयोग के इस जीवन में कुछ भी संभव नहीं हो पाता है। शारदीय नवरात्रि व्रत हमें जीवन जीने की यह कला स्वतः बता जाता है। कामनापूर्त्ति का यह एक ऐसा हेतु है, जिसकी महिमा का कोई अंत नहीं है। श्री दुर्गा सप्तशती में इाया है कि इसी नवरात्रि व्रत की कृपा से सुरथ को पुनः राज्य मिला और समाधि वैश्य जीवन बंधन से मुक्त हो मोक्षाधिकारी हो गए। वहीं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने भी नवरात्रि करके ही रावा पर विजय प्राप्त की थी। तभी तो शारदीय नवरात्रि को 'व्रतराज' कहा गया है।

शत्रु विजय का पर्व है दशहरा

'शत्रु' शब्द से हम बाह्य शत्रुओं के संदर्भ में सोचते हैं, पर आंतरिक शत्रु अधिक खतरनाक हैं। ऐसे शत्रु मुख्य रूप से मोह जनित अज्ञानता से उत्पन्न होते हैं। इस मोहजनित अज्ञानता में ही पतन की शुरुआत है। मंदोदरी ने भी रावण को समझाते हुए कहा था-सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें, हित न तुम्हार शंभु अज कीन्हें।'

पर, रावण का अज्ञानता जनित अंधकार सच को जानने के बाद भी उसे स्वीकार करने में असमर्थ था। मोह जनित अज्ञानात की स्थिति में हम चापलूी और सुनी-सुनाई बातों पर अधिक ध्यान देते हैं, जैसे कैकयी ने मंथरा की सलाह मानकर श्रीराम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँग लिया था। अतिमोह धर्म और कर्म के मार्ग में निरंतर बाधा उत्पन्न करती है।

भय की स्थिति में हमारा समस्त चिंतन दुःख और निराशा के इर्द-गिर्द केंद्रित होता है। वास्तव में, जिस विषय पर हम ध्यान केंद्रित करते हैं, वह हमारे जीवन में बार-बार अभिव्यक्त होता है। लेकिन जिस क्षण साहस से भरकर हम विजय प्राप्ति हेतु प्रयास करते हैं, उत्साह, ऊर्जा और आशा से भर जाते हैं। उस क्षण कोई भी बाधा छोटी हो जाती है, क्योंकि आप बड़े हो जाते हैं। बल से युक्त हो जाते हैं।

बल को शरीर से जोड़ा गया है, पर बल वास्तव में मानसिक होता है। जब आपकी समग्र शक्तियाँ एकत्रित होकर एक तीव्र मानसिक ज्वालापुंज का रूप ले लेती हैं, उस समय आपकी विचार तरंगे ही पर्याप्त हैं, शत्रु पर विजय पाने के लिए। दरअसल, बल आपके मन का दृढ संकल्प है। आपका मन एक कल्पवृक्ष है। यहाँ फलित वही होता है, जो आप चाहते हैं। जीवन में विजयी रहने के लिए सही समय पर उचित कार्य पूर्ण ऊर्जा के साथ संपन्न करें, साहस युक्त रहें। आपको अपने प्रत्येक कार्य में विजय अवश्य मिलेगी। विजयादशमी पर्व का यही संदेश है। --- नंद किशोर श्रीमाली

नवरात्र पर्व का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक रहस्य

नवरात्रि वर्ष में दो, चार, नौ अथवा चालीस बार आता है। इसका वैज्ञानिक रहस्य क्या है। इसके नामकरण में रात्रि शब्द क्यों जुड़ा है ? नवदिन कहने से नवरात्र का बोध क्यों नहीं होता, इत्यादि प्रश्न जो नवरात्र से संबंध रखते हैं, प्रत्येक साधक को उद्वेलित करते रहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक संवत्सर काल का मूर्त रूप होता है। इसके मुख्यतः चार भाग आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मेष, कर्क, तुला एवं मकर की संक्रांतियों का काल। ये कालपुरुष के सिर, पैर तथा दो भुजाएं हैं। इन चारों के संयोग से ब्रह्माण्ड में अदृश्य रू से एक स्वस्तिक का निर्माण होता है, जो समस्त प्राणियों के कल्याण का हेतु है। अतः इस समय विशेष में शक्ति की बहुलता प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर होती है। इसमें स्वल्प साधना से ही साधक अधिक शक्ति का संचय कर लेता है। इस काल में मानव ही नहीं देव, दानव, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सिद्ध, चारण, विद्याधर आदि भगवती की अराधना से स्वयं को ेतार्थ करते हैं। भले ही गणितीय दृष्टि से चालीस नवरात्र सिद्ध होते हों, किंतु तात्विक दृष्टि से उनका कोई विशेष अर्थ नहीं है। चान्द्रमास के अनुसार चार नवरात्र सम्यक् रूप से प्रतिष्ठित हैं, तथापि परम्परा से दो नवरात्र सर्वमान्य हैं। ये चैत्र तथा आश्विन मास में विहित हैं। सृष्ट्यादि में चैत्रमास, मधुमास नाम से तथा आश्विन मास ऊर्ज मास के नाम से व्यवहृत होता था। ध्यातव्य है कि मधु एवं ऊर्ज दोनों शक्ति के पर्याय हैं। अतः शक्ति अराधना के लिए सर्वोत्तम इस कालखण्ड को ऋषियों ने नवरात्र शब्द से संबोधित किया है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार **नवानां रात्रीणां समाहारः** अर्थात् नौ रात्रियों का समूह ही नवरात्र है। रात्रि शब्द का अर्थ विश्रामदात्री, सुखदात्री तो है ही, किंतु इसका एक अर्थ जगदम्बा भी है। **'रात्रिरूपा यतो देवी दिवा रूपो महेश्वरः'** अर्थात् रात्रि देवी का स्वरू है और दिन महेश का। तंत्र ग्रंथों मे ंदेवी के नाम में तीन रात्रियों का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। कालरात्रि, महारात्रि एवं मोहरात्रि। ये तीनों क्रमशः महासरस्वती, महाकाली एवं महालक्ष्मी के पर्याय हैं। महासरस्वती की विशेष रात्रि आश्विनशुक्ल अष्टमी है, तो कार्तिककृष्ण अमावस्या (दीपावली) महालक्ष्मी की रात्रि तथा महाशिवरात्रि फाल्गुनेष्ण चतुर्दशी महाकाली की रात्रि कही गयी है। प्रत्येक संवत्सर में इन तीन रात्रियों के अतिरिक्त जिन अन्य रात्रियों में देवी की ंपा की अभिलाषा साधक करते हैं, वह है नवरात्र। नवरात्र में दिन की अपेक्षा रात्रिजागरण अथवा रात्रिकाल की साधना विशेष महत्वपूर्ण है। नवरात्र शब्द में प्रयुक्त नौ का अंक भी पूर्ण है और शून्य भी। शून्य को घटाते हुए रसातल तक चले जाएं या बढ़ाते हुए अनंत आकाशतक पहुँच जाएं, तब भी शून्य ज्यों का त्यों बना रहता है और यही स्थिति नौ अंक के विषय में भी है। ये दोनों अंक ब्रह्म के प्रतीक हैं। इस शून्य एवं नौ अंक के मध्य में एक से आठ तक के अंक परमात्मा की अष्टधा प्रकृति के प्रतीक हैं। शून्य का अर्थ है कुछ नहीं, तथापि वह रहता है, और रहता ही नहीं अपितु इसके बिना अन्य सभी अंक अपूर्ण रहते हैं, अतः इसका निषेध नहीं किया जा सकता। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं-

राम नाम को अंक है सब साधन को सून। अंक गये कछु हाथ नहीं, अंक रहे दस गुन।।

माया जीव सुभाव गुन, काल करम महदादि। ईस अंक ते बढ़त सब ईस अंक बिनु बादि।।

अर्थात् परमात्मा का नाम ही अंक है तथा सभी साधन शून्य है। ंअंक न रहने पर कुछ भी हाथ नहीं लगता, किंतु शून्य से पहले अंक आने पर वे दस गुने हो जाते हैं। माया, जीव, स्वभाव, गुण, काल, कर्म, महत् तथा पंचतत्व आदि सभी शून्य अंक के समान हैं। ये ईश्वर रूपी अंक के संयोग से बढ़ते हैं तथा उसके बिना व्यर्थ हो जाते हैं। एक अंक से सृष्टि का प्रारंभ है और नौ पर पूर्णता। इस शक्ति के सहित शक्तिमान को प्राप्त करने के लिए भक्तों को नवधा भक्ति का आश्रय लेना पड़ता है। जीवात्मा नवद्वार वाले पुर (शरीर) का स्वामी है। इसमें

नौ छिद्र हैं। **नव छिद्र मयो देहः'** अतः इन छिद्रों को पार करता हुआ जीवात्मा ब्रह्म तत्व को उपलब्ध कराता है। अतः नवरात्र की प्रत्येक तिथि के लिए कुछ साधन ज्ञानियों द्वारा नियत किए गये हैं। प्रतिपदा तिथि को शुभेच्छा भी कहते हैं। यह प्रेम को जगाती है। प्रेम के बिना समस्त साधन व्यर्थ हो जाते हैं। प्रेम भी अविचल, अडिग रहना चाहिए। अतएव इस तिथि को शैलपुत्री का विशेष आवाहन किया जाता है। ध्यातव्य है कि अचल पदार्थों में पर्वत सर्वाधिक स्थिर प्रतीत होते हैं। द्वितीया तिथि को धैर्यपूर्वक द्वैतबुद्धि का परित्याग कर ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्मचारिणी माँ का ध्यान एवं पूजन में संलग्न रहना चाहिए। चतुर्थी तिथि में अंतःकरण चतुष्टय मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार का त्याग करता हुआ अर्थात् अंतःकरण के तादात्म्य का त्यागकर द्रष्टारूप से अथवा इन मन, बुद्धि आदि को कुष्माण्डा देवी के चरणों में अर्पित कर साधन में स्थिर रहना चाहिए। पंचमी तिथि में इंद्रियों के पंच विषयों को अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गंध का त्याग करता हुआ स्कन्दमाता के चरणों का ही ध्यान करें। षष्ठी तिथि में षड्विकार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह एवं मात्सर्य का परित्याग करें अथवा इन विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिए कात्यायानी देवी को प्रणाम निवेदन करें, उन्हीं की कृपा से कामादि दोषों का शमन होता है। सप्तमी तिथि का साधन यह है कि सात धातुओं रक्त, मांस, रस, मेद, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र से निर्मित क्षणभंगुर दुर्लभ मानव देह को सार्थक करने के लिए कालरात्रि के चरणों का अवलम्बन ग्रहण करें। अष्टमी तिथि में ब्रह्म की अष्टधा प्रकृति पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार से परे महागौरी के स्वरूप का ध्यान करता हुआ ब्रह्म से एक्यता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। पुनः नवमी तिथि में माँ सिद्धिदात्री की अराधना से नवद्वार वाले शरीर की प्राप्ति को धन्य बनाता हुआ आत्मस्थ हो जायें, यही स्वरूप स्थिति है। नवमी तिथि सिद्धिदायनी है। अतएव इस दिन की अधिष्ठात्री देवी सिद्धिदात्री हैं। पौराणिक दृष्टि से आठ लोकमाताएं हैं तथा तंत्रग्रंथों में भी अष्टशक्ति की चर्चा है। प्रथम ब्रह्माणी शक्ति हैं, जो सृष्टि की प्रतीक हैं। दूसरी शक्ति महेश्वरी हैं जो संहारिणी एवं नियंत्रिका शक्ति है। तीसरी शक्ति कौमारी आसुरी वृत्तियों का दमन कर दैवी गुणों की रक्षा करती हैं। चौथी वैष्णवी शक्ति हैं, जो संपूर्ण सृष्टि का पालन करती हैं। पाँचवी वाराही शक्ति हैं जो आधारशक्ति हैं। इसे काल शक्ति भी कहते हैं। छठी शक्ति नारसिंही है, जिसे ब्रह्मविद्या भी कहते हैं। यह स्वरूप ज्ञान को प्रकाशित करती है। सातवीं शक्ति ऐन्द्री हैं। इसे विद्युत शक्ति के रूप में भी माना गया है। यह संपूर्ण इन्द्रियों की अधिपति हैं तथा जीव के कर्मों को प्रकाशित करती हैं। आठवीं शक्ति चामुण्डा है। प्रवृत्ति चण्ड है और निवृत्ति मुण्ड। इन दोनों का विनाश करने वाली शक्ति ही चामुण्डा है। इसी स्वरूप को प्रलय शक्ति के रूप में भी माना गया है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार शुम्भ दैत्य क्रोधित होकर जब माँ दुर्गा से कहता है कि हे दुष्टे! तू दूसरों का आश्रय लेकर घमण्ड से चूर हो रही है, तब देवी उसको उत्तर देती हुई कहती हैं-

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। पश्यैता दुष्ट मय्यैव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।

अर्थात् इस जगत में मैं एक ही हूँ। ये समस्त विभूतियाँ मेरी रूपान्तर मात्र हैं। ये मुझसे ही प्रकट हुई हैं और मुझमें ही विलीन कर जाएंगी। माँ के ऐसा कहने पर उनसे प्रकट हुई जो आठ शक्तियाँ थी, तत्क्षण देवी में प्रविष्ट हो गयीं। आठ आसुरी शक्तियाँ अपने स्वामी के सहित इस प्रकार हैं। मोह महिषासुर, काम रक्तबीज, क्रोध धूम्रलोचन, लोभ सुग्रीव, मदमात्सर्य चण्डमुण्ड, रागद्वेष मधुकैटभ, ममता निशुम्भ तथा अहंकार ही शुम्भ है। अष्टमी तिथि तक इन आठों दुर्गुण रूपी दैत्यों का संहार कर नवमी तिथि में प्रेति पुरुष का एकाकार होना ही नवरात्र का आध्यात्मिक रहस्य है। वस्तुतः पृथक-पृथक दृष्टिगोचर होने वाली ये सभी शक्तियाँ अभिन्न हैं। तथापि उपासकों की दृष्टिभेद से ही इनके नाम और रूपों में भेद माना जाता है। शक्ति एवं सिद्धि प्राप्ति हेतु ही भगवती जगदम्बा की उपासना की जाती है। अतः नौ दुर्गा में अंतिम नाम सिद्धिदात्री ही है। संपूर्ण सृष्टि में जितनी भी वस्तुएं अनुभव में आती हैं, वे सभी अपूर्ण हैं। वे स्थान में, काल में, वस्तु में, एक रस न होने से सर्वत्र क्षणिक हैं। अतएव इन सबका विस्तार एक से आठ पर्यन्त ही हैं तथा पूर्ण वस्तु होने से आत्मा या ब्रह्म को नौ अंक का प्रतिनिधि माना गया है। वही सबका अस्तित्व है। अतः नौ अंक अनंत है, पूर्ण है और यही कारण है कि जगदम्बा नौ रात्रियों में ही नवरात्र के समय में जीव का उद्धार करती हैं और यही नवरात्र व्रत, पूजन, भजन, साधन आदि का मुख्य तात्पर्य भी है।

चंचल मन को शक्ति देती हैं, आदिशक्ति

इस सृष्टि की सभी शक्तियों की जननी और आदि कारण आदिशक्ति ही हैं। इस जग में शक्ति के जितने लौकिक और अलौकिक रूप हैं, वे सब आदिशक्ति के ही स्वरूप हैं। दुर्गा आदिशक्ति का ही नाम रूप हैं। युवाओं के लिए शक्ति उपासना के इस महापर्व का बहुत महत्व है। आदिशक्ति की उपासना से शक्ति संपन्नता तो हासिल होती ही है, साथ ही शक्ति संतुलन और उसके उचित उपयोग का विवेक भी जाग्रत होता है। युवा मन अथाह शक्तियों का भंडार अवश्य है, किंतु वह अपनी समस्त शक्तियों से परिचित नहीं रहता। फिर उसके द्वारा शक्तियों के अनुचित उपयोगी की भी आशंका रहती है। नवरात्र में की जाने वाली शक्ति आराधना इस संभावना को जड़ से ही समाप्त कर देती है। युवाओं को नवरात्र में शक्ति की उपासना व साधना अवश्य करनी चाहिए। इससे उन्हें अपने लक्ष्यों और कामनाओं की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

नवरात्र में की जाने वाली आदिशक्ति की आराधना को जो सर्वाधिक प्रभाव साधक पर पड़ता है, वह यह कि साधक का तन-मन शुद्ध हो जाताहै और उसकी मानसिक शक्तियाँ बलवती हो जाती हैं। नवरात्र का व्रत,उपवास, आहार और उसमें किया जाने वाला आचरण सभी मिल कर मन पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं और जो युवा मन, चंचल चित्त के कारण अस्थिर रहता है, वह शांत हो जाता है। आदिशक्ति की साधना उसके पूरे व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालती है।

नवरात्र के नौ दिनों में आदिशक्ति के तीन मुख्य सगुण स्वरूपों और नौ विभिन्न रूपों की साधना की जाती है। वे सभी स्वरूप आदिशक्ति के विभिन्नण गुणों के बोधक हैं और इनकी उपासना से आदिशक्ति का भक्त इन गुणों को प्राप्त करता है।

नवरात्र के प्रथम दिन देवी दुर्गा के शैलपुत्री स्वरूप की साधना की जाती है। इनकी उपासना से युवाओं का मानसिक विकास होता है और वे सही-गलत के निर्णय करने में सफल होते हैं। अपने लक्ष्यों या कैरियर के चुनाव में अनिश्चय की स्थिति दूर करने के लिए इस स्वरूप की साधना करनी चाहिए। देवी का ब्रह्मचारिणी स्वरूप साधक में दृढता, संयम और साहस का गुण भरता है। कठिन लक्ष्यों की प्राप्ति के इच्छुक साधक को इनकी साधना करनी चाहिए। सिविल सेवा परीक्षा, इंजीनियरिंग आदि की तैयारी करने वाले युवाओं को भी इस स्वरूप की साधना करनी चाहिए। मैनेजमेंट और कला के क्षेत्र में किस्मत आजमाने वाले युवाओं को चंद्रघंटा की पूजा-उपासना करनी चाहिए। गायकों व वक्ताओं को इनकी साधना विशेष लाभकारी होती है। इनकी साधना से स्वर प्रभावी और माधुर्य से युक्त हो जाता है। खेल की दुनिया में किस्मत आजमाने वालों को देवी के कूष्मांडा स्वरूप की उपासना जरूर करनी चाहिए। इससे शरीर रोग रहित और बलशाली होता है।

लेखन, मेडिकल के क्षेत्र में अपना कैरियर बनानो वालों को स्कंदमाता तथा राजनीति और समाजसेवा के कार्यों से जुड़ने वालों की देवी कात्यायनी की पूजा-अर्चना करनी चाहिए। यो युवा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता हासिल करना चाहते हैं या जिनके व्यवसाय में प्रगति नहीं है, उन्हं देवी कालरात्रि की पूजा करनी चाहिए। बिजनेस मैनेजमेंट करनेवाले छात्र भी कालरात्रि देवी की पूजा-अर्चना कर सकते हैं। योग्य जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन में सुख प्राप्ति के लिए महागौरी की उपासना करनी चाहिए।

नवरात्र के अंतिम दिन आदिशक्ति के सिद्धिदात्री स्वरूप की उपासना की जाती है। जीवन में हर तरह की सुख समृद्धि कीप्राप्ति के लिए इनकी उपासना करनी चाहिए। इनकी पूजा-साध7ना से जीवन में कभी कोई परेशानी या बाधा नहीं उत्पन्न होती और इनका भक्त आजीवन भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए मोक्ष की प्राप्ति करता है। --- चामुण्डा स्वामी

नवरात्र : आत्मा व प्राण का उत्सव

आदिशक्ति के तीन मुख्य सगुण स्वरूप हैं- महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती। नवरात्र में इनकी उपासना से साधक के जीवन में किसी चीज की कमी नहीं रहती और उसका जीवन संपूर्णता से भरा रहता है।

नव के दो अर्थ हैं-नया एवं नौ। रात्रि का अर्थ है रात, जो हमें आराम और शांति देती है। यह नौ दिन समय है, स्वयं के स्वरूप को पहचानने का और अपने मूल की ओर वापस जाने का। इस परिवर्तन के काल में प्रकृति पुराने को त्याग कर नया रूप निर्माण करती है। जैसे एक नवजात जन्म लेने से पहले अपनी माँ के गर्भ में नौ महीने रहता है, उसी तरह एक साधक भी इन नौ दिनों और रातों में उपवास, प्रार्थना, मौन और ध्यान के द्वारा अपने सच्चे स्रोत की ओर वापस आता है। रात को रात्रि भी कहा जाता है, क्योंकि ये जीवन को फिर से ऊर्जा प्रदान करती है। नवरात्र तीनों स्तर पर राहत देती है-स्थूल, सूक्ष्म और कारण। उपवास शरीर को पवित्र करता है, जबकि मौन वाणी को पवित्र करते हुए बेचैन मन को शांत करता है। ध्यान एक साधक को अपने अस्तित्व की ओर ले जाता है।

इन नौ रात और दस दिनों के दौरान शक्ति, दैवी चेतना की आराधना होती है। नवरात्र के पहले तीन दिन देवी दुर्गा की आराधना होती है, जो वीरता और आत्मविश्वास की प्रती हैं। इसके बाद के तीन दिन लक्ष्मी देवी के लिए हैं, जो धन-धान्य का प्रतीक हैं। अंत के तीन दिन सरस्वती देवी के लिए हैं, जो ज्ञान का प्रतीक हैं।

ऐसी बहुत सी कथाएं हैं कि कैसे माँ दिव्य रूप में अवतरित होकर मधु-कैटभ, शुम्भ-निशुम्भ और महिषासुर जैसे कई असुरों का वध कर शांति व सत्य की स्थापना करती हैं। देवी ने इन असुरों पर विजय प्रापत की। ये असुर नकारात्मक शक्तियों के प्रतीक हैं, जो कभी-भी और किसी को भी अपने वश में कर सकती हैं।

ये असुर कौन हैं? मधु राग है और कैटभ का अर्थ है द्वेष। ये सबसे प्रथम असुर हैं। कई बार हमारा व्यवहार हमारे नियंत्रण में नहीं रहता, वह आनुवंशिक (जेनेरिक) है। रक्तबीजासुर का अर्थ है, गहरी समाई हुई नकारात्मकता और वासनाएं। महिषासुर का अर्थ है, जड़ता-एक भैंस की तरह। महिषासुर भारीपन और जड़ता का प्रतीक है। दैवी शक्ति ऊर्जा लेकर आती है और जड़ता को उखाड़ फेंकती है। शुम्भ-निशुम्भ का अर्थ है, सब पर संदेह। खुद पर संदेह, शुम्भ है। कुछ लोग खुद पर संशय करते हैं। निशुम्भ का अर्थ है-अपने आसपास, सब पर संदेह करना। नवरात्र आत्मा और प्राण का उत्सव है। यही असुरों का नाश कर सकती है।

नवरात्र के अंत पर हम विजयादशमी का उत्सव मनाते हैं। दसवाँ दिन विजय उत्सव। यह दिन जागी हुई दिव्य चेतना में परिणत होने का है। पुनः अपने आप को धन्य महसूस करें और जीवन में जो कुछ मिलता है, उसके लिए और भी कृतज्ञता महसूस करें। -- **श्री श्री रविशंकर**

किसी भी प्रकार के ज्योतिषीय समाधान एवं परामर्श हेतु अवश्य मिलें :-

वेदांग हिन्दू ज्योतिष केंद्र

मदन मोहन गुप्ता (माता दुर्गा एवं श्री बजरंगबली महावीर हनुमान के महान भक्त, शाबर मंत्र विशेषज्ञ, ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुशास्त्री)

श्री राम भवन, सिटी जाँच घर के सामने गुरहट्टा, पटना सिटी–8.

Mob:- 9931280478, E-mail:- mmk_city@redifmail.com & mmk_city@gmail.com

कृपया मिलने से पहले फोन करके समय की जानकारी ले लेंगे।

शुभ दीपावली ॐ शुभ दीपावली

।। श्री गणेशाय नमः।।

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

।। ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

ॐ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

–: दीपावली के अवसर पर महालक्ष्मी पूजन के लिए शुभ मुहूर्त्त विचार :–

प्रत्येक वर्ष कार्त्तिक माह की अमावस्या तिथि को दीपावली का पावन पर्व मनाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति/ साधक/उपासक अपने जीवन में स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति की कामना करता है। शाक्त तंत्र साधना के बाद लक्ष्मी तंत्र साधना ही विश्व में सर्वाधिक होती है। लक्ष्मी किसे नहीं चाहिए ? महालक्ष्मी तत्व के प्रत्येक आयाम हैं। एक साधु के लिए उसकी साधना, कमण्डल, चिमटा, आसन, नियमित मिलने वाली भिक्षा ही लक्ष्मी का स्वरूप है, तो एक व्यापारी के उसका संपूर्ण व्यापार, सोने–चांदी इत्यादि। लक्ष्मी गृहस्थों के यहाँ गृह लक्ष्मी के रूप में, तो सत्ताधारियों के यहाँ राजलक्ष्मी के रूप में विराजमान होती है। साधकों/उपासकों के यहाँ सिद्ध लक्ष्मी के रूप में विराजमान होती है।

लक्ष्मी की साधना केवल स्थिर लग्न में होती है। बारह राशियाँ हैं। इनमें कुछ स्थिर स्वभाव की, कुछ चर स्वभाव के तो कुछ द्विस्वभाव के होते हैं। एक अहोरात्र यानि 24 घंटे के एक दिन–रात में प्रत्येक राशियाँ लगभग दो घंटे के लिए लग्न स्थान पर होती हैं। इन राशियों में वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशियाँ स्थिर स्वभाव की होती हैं। अतः इन राशियों में ही लक्ष्मी पूजन को प्रधानता दी जाती हैं। वृश्चिक और कुम्भ राशियाँ दिन में होती हैं, वृष संध्या काल में तो सिंह लग्न मध्य रात्रि के आस–पास होता है। वृश्चिक और कुम्भ लग्न में व्यापारीगण पूजन करते हैं तो शाम के समय वृष लग्न में गृहस्थ लोग और सिंह लग्न में तंत्र उपासक तंत्र साधना संपन्न करते हैं। वैसे आजकल अपनी सुविधा के अनुसार लोग किसी भी समय पूजा कर लेते हैं। यह मुहूर्त्त उन लोगों के लिए हो सकता है, जो घंटे–दो घंटे में अपनी पूजा संपन्न कर लेते हैं। उन लोगों के लिए इससे कुछ विशेष मतलब नहीं है, जो सात–आठ घंटे का इससे ज्यादा का विशेष अनुष्ठान संपन्न करते हैं। लेकिन कम–से–कम स्थिर लग्न में लक्ष्मी पूजन हेतु कलश स्थापना या लक्ष्मी के मूर्त्ति की प्राण–प्रतिष्ठा इत्यादि हो जानी चाहिए। यहाँ मैं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु स्थिर लग्न की सूची समय के साथ दे रहा हूँ।

दीपावली – दिनांक 27 अक्टूबर 2019 (रविवार) – विषकुम्भ योग – चित्रा नक्षत्र – अमावस्या तिथि 27 ता0 के दिन (दोपहर) में 12:33 PM से लेकर 28 ता0 के सुबह में 09:08 AM तक है।

लक्ष्मी पूजा मुहूर्त्त – शाम में 6:16 PM से 07:42 PM तक (1 घंटा 27 मिनट)

प्रदोष काल – शाम में 5:08 PM से 7:42 PM तक; **वृषभ काल** – शाम में 6:16 PM से 8:13 PM तक

लक्ष्मी पूजा के लिए अभिजीत मुहूर्त्त – दोपहर में 11:11 AM से 11:56 AM तक

दिनांक 27/10/2019 (दीपावली) को स्थिर लग्नों की सूची

वृश्चिक लग्न – सुबह में 07:32 AM से 09:49 AM तक

कुम्भ लग्न – दोपहर में 13:39 PM से अपराह्न 15:10 PM तक

वृष लग्न – शाम में 18:16 PM से 20:13 PM तक

सिंह लग्न – मध्य रात्रि में 24:45 AM (12:45) से 26:59+ AM (02:59:00) AM अर्थात् 27 ता0 की रात्रि में तीन बजे तक (अर्थात् 28 ता0 की सुबह में 3 बजे तक)

–: दिनांक 19/10/2019 (दीपावली) की चौघड़िया :–

दिन की चौघड़िया	रात की चौघड़िया
05:58 AM – 07:22 AM उद्वेग	17:08 PM – 18:45 PM शुभ
07:22 AM – 08:46 AM चर	18:45 PM – 20:21 PM अमृत
08:46 AM – 10:09 AM लाभ	20:21 PM – 21:57 PM चर
10:09 AM – 11:33 AM अमृत (वार वेला)	21:57 PM – 23:33 PM रोग
11:33 AM – 12:57 PM काल	23:33 PM – 25:10+ AM काल
12:57 PM – 14:21 PM शुभ	25:10+ AM – 26:46+ AM लाभ (काल रात्रि)
14:21 PM – 15:45 PM रोग	26:46+ AM – 28:22+ AM उद्वेग
15:45 PM – 17:08 PM उद्वेग	28:22+ AM – 29:59+ AM शुभ

प्रस्तुति :– **श्री अभिषेक कुमार**, (मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
परमपूज्य गुरूदेव श्री निखिलेश्वरानंद जी महाराज के परम प्रिय शिष्य, शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:– हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com

किसी भी प्रकार के ज्योतिषिय अथवा आध्यात्मिक परामर्श के लिए आप अवश्य मिलें। समयः– केवल शनिवार एवं रविवार, सुबह में 11 बजे से 2 बजे तक

शक्ति अनुसंधान केंद्र : यहाँ प्रत्येक पूर्णिमा की महारात्रि को शक्ति अनुसंधान किया जाता है।

ॐ

।। ह्रीं वद् वद् वाग्वादिनी स्वाहा ।।

(आखिरी पन्ने से)

–: साधकों/उपासकों द्वारा नवरात्र के पूजन में की जाने वाली सामान्य भूलें :–

इस पेज पर मैं कुछ और लिखना चाह रहा था, जैसे पूजन के सामान्य नियम या कोई लेख इत्यादि। किंतु इस अति गंभीर विषय पर अचानक माता जगदम्बा ने मुझे लिखने के लिए संकेत दिया। यह विचार मेरे मन में बहुत दिनों से थी, कि इस पर चर्चा की जानी चाहिए। आमतौर पर नवरात्र के पूजन में अनजाने में ही सही, भक्तों द्वारा कुछ बहुत बड़ी गलतियाँ हो जाती हैं, जिसकी उन्हें जानकारी नहीं होती है। मैं अपने अनुभव एवं अपने ज्ञान तथा तर्क शक्ति के आधार पर इस महत्वपूर्ण विषय पर लिख रहा हूँ। आशा है आप सभी वास्तविक साधक/उपासक इस पर गंभीरता से विचार करेंगे। अगर आपको उचित लगे तो अपने नियमों में बदलाव कर सकते हैं, नहीं तो आप अपनी परम्परा का पालन अपने विचार से कर सकते हैं।

1. **नवरात्र में छः दिनों तक (षष्ठी तक) देवी की प्राण–प्रतिष्ठित प्रतिमा का चेहरा ढंक देना और उनकी पूजा रोक देना** :– यह अनजाने में एक बहुत बड़ी गलती अधिकतर साधक या मंदिरों के पुजारी कर बैठते हैं। आमतौर पर हमारे आस–पास जो पंडित महाशय हैं, वे केवल परम्परा वश मिट्टी के मूर्त्ति की पूजा करने के नियम जानते हैं और जैसा कि वे अपने बाप–दादों से सीखते चले आएं हैं कि सप्तमी के दिन माता का पट खुलता है, तो बस इसी नियम के सहारे मंदिरों में पहले से प्राण–प्रतिष्ठित प्रतिमा को कपड़े से ढंक देते हैं और उनकी पूजा रोक कर केवल कलश की पूजा करते रहते हैं। मैं एक बात आपसे पूछता हूँ। किसी भी व्यक्ति अथवा प्राणी को उसकी जिंदगी में कितने बार प्राण शरीर में आता है, बस केवल एक बार। किसी भी जीवधारी के शरीर में प्राण केवल एक बार आता है और एक बार निकल जाता है। इसका कोई विकल्प नहीं है। क्या कोई दावा कर सकता है कि वह जब चाहे अपने शरीर से प्राण निकाल लेता है और जब चाहे वापस बुला लेता है। बस यही बात प्राण–प्रतिष्ठित धातु या पत्थर की प्रतिमाओं के बारे में है। उनमें भी बस केवल एक बार ही प्राण प्रतिष्ठा होता है अथवा मात्र एक बार ही विसर्जन होता है। ऐसा पूजन का कोई नियम नहीं है कि रोज–रोज किसी प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा अथवा विसर्जन किया जाय। शास्त्रों में प्राण–प्रतिष्ठित मूर्त्ति की पूजा रोके जाने का हर प्रकार से निषेध किया गया है। जब बहुत आपत्ति काल हो, जैसे कि घर में कोई सूतक हो जाए, या केदारनाथ जैसी कोई प्राकृतिक आपदा तब अलग बात है। आप किसी भी शक्तिपीठ में चले जाओ, जैसे कामाख्या, विन्ध्याचल, वैष्णोदेवी, तारा शक्तिपीठ, कालीघाट, मैहर इत्यादि कहीं भी माता का पट बंद नहीं किया जाता, बल्कि भक्तों को पूजन के लिए और भी समय मिले इसके लिए मंदिर का पट बंद करने का समय भी बढ़ा दिया जाता है और अहले सुबह ही मंदिर को खोल दिया जाता है। पर यहाँ के पंडितों में बिना चिंतन किए केवल देखा–देखी ऐसा ही होता है, कर दिया। एक बात पूछता हूँ। और किसी देवता के तो पट बंद नहीं किए जाते, फिर नवरात्र में देवी की प्रतिमा के ही क्यों? हाँ, कामाख्या में केवल अम्बुवाची पर्व के अवसर पर मंदिर के कपाट बंद किए जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि उस समय माता रजस्वला होती है, इसलिए। कलश स्थापना एवं उसका पूजन तो प्रतिमा के स्थापित होने का प्रथम क्रिया विधि मात्र है। और जब मूर्त्ति प्राण–प्रतिष्ठित होकर बैठ गयी, देवी अपने संपूर्ण स्वरूपों में भक्तों को दर्शन देने के लिए तत्पर है तो फिर कलश का महत्व गौण हो जाता है। कलश प्रतीक है अखिल ब्रह्माण्ड के पूजन का। जहाँ मूर्त्ति पूजा का निषेध रहता है, वहाँ कलश पर ही पूजा की जाती है। जैसे रजरप्पा में छिन्नमस्तिका देवी के मंदिर के परिधि के 50 किमी0 के गाँव। भगवती छिन्नमस्तिका अत्यंत प्रचण्ड महाशक्ति हैं, महाविद्या हैं। जब ये चलती हैं, उससे बहुत पहले ही भगवती दुर्गा, काली जैसी शक्तियाँ जा चुकी होती हैं। माता छिन्नमस्तिका के आगे कोई शक्ति पिण्ड धारण नहीं कर पाती है। अतः वहाँ के आस–पास के गाँवों में किसी भी देवी की प्रतिमा स्थापित नहीं होती और सभी पूजन केवल कलश पर ही संपन्न किए जाते हैं। आपकी जानकारी हेतु बता दूं कि छिन्नमस्तिका शक्ति वहीं पर क्रियाशील हो पाती हो, जो एकलिंग स्थान हो, अर्थात् 50 किमी0 के एरिया में मात्र एक शिवलिंग रहे, तो वह एकलिंग स्थल कहलाता है। पुराने रजरप्पा में यह विशेषता थी। परशुराम जी की तपस्या स्थली है। आशा है कि मेरे इस लेख को पढ़कर, विचार को जानकर इस बार इस गलती को नहीं दुहराएंगे। चलिए मान लिया कि ऐसी परम्परा रही है और मंदिरों को सप्तमी तक अनावश्यक भीड़ से बचाने के लिए भी अगर ऐसा किया जाता है तो यह निवेदन करना चाहूंगा कि केवल प्रतिमा के आगे पर्दा कर दें और प्रतिमा को न ढंके। जैसा हमेशा करते आए हैं उसी प्रकार नवरात्र के दिनों में भी पहले से प्रतिष्ठित प्रतिमा की पूजा–अर्चना करते रहें। और हाँ, अगर पूजा रोकना ही चाहते हैं तो पहले प्रतिमा को किसी पवित्र नदी या सरोवर में डूबा कर पुनः निकाल लें और विसर्जन का मंत्र पढ़कर साल भर पूजा रोक दें और पुनः उसे सप्तमी के दिन प्राण–प्रतिष्ठा कर के पूजा करें। धातु या पत्थर की स्थायी प्रतिमा के विसर्जन का यही तरीका शास्त्रों में बताया गया है।

2. **कलश में दीपक के लौ को इधर–उधर करना, उसकी दिशा बदलना** :– क्या करें, हमारे अधिकतर पंडित महाशय और भक्त लोग थोड़ा वास्तुशास्त्र ज्यादा पढ़ लिए हैं। बस पूर्व–पश्चिम और उत्तर–दक्षिण में अटके रहते हैं। कलश

में जो आप नवरात्र के नौ दिनों में जलने वाले अखण्ड लौ की व्यवस्था करते हैं, वह केवल प्रकाश देने के लिए दीपक की लौ नहीं है, बल्कि वह प्रतीक है माता ज्वाला देवी का। देवी का वास अग्नि में माना गया है। तत्वों के निरूपण में देवी अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है। अखण्ड दीपक द्वारा हम आदिशक्ति से यह प्रार्थना करते हैं कि हे माँ जगदम्बा! नवरात्र के पूरे नौ दिन इस ज्वाला के रूप में आप हमारे पूजन स्थल पर विराजमान रहें। लेकिन कुछ भक्त लोग सुबह में पूर्व दिशा की तरफ तो शाम मे उस दीपक का मुँह पश्चिम की तरफ कर देते हैं और अखण्ड लौ को चलायमान कर देते हैं। एक तो शक्ति वैसे ही गामिनी है, चंचला है, उस पर भी आप और उसे इधर से उधर करते हो। अखण्ड दीपक का नियम यह है कि जिस दिशा की तरफ ज्वाला प्रतिष्ठापित की गयी है, पूरे साधना काल में उसी तरफ जलेगी, चाहे वह कोई भी दिशा हो। सबसे अच्छा तो यह होता है कि दीपक का लौ ऊर्ध्वगामी हो, ऊपर की तरफ जले। इससे दिशाओं का चक्कर नहीं रहेगा। अन्यथा देवी के प्रतिमा की तरफ ही दीपक का लौ रहना चाहिए।

3. **हवन कुण्ड में जौ बोना** :– यह एक बहुत बड़ी गलती आमतौर पर साधक लोग कर बैठते हैं। इस जौ बोने को वे केवल अच्छे दिखने के लिए एक शो–पीस मात्र समझते हैं कि हरा–हरा लगेगा। लेकन यह एक बहुत बड़ी गलती है। देवी की पूजा में, नवरात्र में मिट्टी में जौ क्यों बोए जाते हैं, इसका कारण, इसकी व्याख्या आपको दुर्गा तंत्र में नहीं मिलेगा, बल्कि बहुत–दूर इसे कामकला काली तंत्र एवं गुह्य काली तंत्र तक ले जाना पड़ेगा। वास्तव में जनन का महाविज्ञान है। प्रकृति की वह पूजा है, जिसमें आदि शक्ति प्रथम गर्भ धारण करती है। आप इतिहास पढ़ें। सिंधु घाटी सभ्यता में, आर्यों के आगमन से भी पहले, एक मिट्टी की मूर्त्ति मिली है, जिसे प्रकृति देवी की संज्ञा दी गयी है, जिसमें दिखाया गया है कि प्रतिमा के नाभी से एक वृक्ष निकल रहा है और देवी उसे हाथों में पकड़ कर रक्षा प्रदान कर रही है। यह अंकुरित जौ प्रतीक है कामदेव का, सृजन के महाविज्ञान का। इसे तंत्र शास्त्रों में **मदन रोपण** अथवा **कामदेव आरोहन** कहा जाता है। गुह्य काली तंत्र में जब आप जाएंगे तो वहाँ स्पष्ट उल्लेख है कि पंक में अन्न का रोपण करें और उस पर विभिन्न प्रकार से सृजन के आदिस्रोत कामदेव का पूजन करें। अंत में इस का एक भाग देवी गुह्यकाली को प्रस्तुत किया जाता है। पहले कामदेव का पूजन होता है, तब देवी की। और आप हवनकुण्ड में इस जौ को रोपकर अग्नि द्वारा उसे जला देते हैं। यह अंकुरित अन्न जलने का प्रतीक है आप सृजन कार्य, पालन कार्य को संहार में परिणत कर रहे हैं। यह कामदेव परम पुरुषत्व का प्रतीक है। पुरुषत्व का अर्थ केवल आप बच्चे पैदा करना नहीं समझ लें। बल्कि पुरुषत्व का यह तो अत्यंत निचला स्तर मात्र है, केवल शरीर के तल पर। पुरुषत्व की भावना बहुत व्यापक है। इसे मैं इन कम पृष्ठों पर अभी नहीं समझा सकता। वह एक अलग विषय हो जाएगा। यह कामदेव देवी को बहुत ही प्रिय है। यही कारण है कि अधिकतर साधकों में समय से पहले वृद्धावस्था आ जाती है। जब कुछ प्राप्त करने का समय आता है, तो सब कुछ छोड़कर जाने की बात करने लगते हैं। पुरुषत्वहीन हो जाते हैं। क्यों, क्योंकि तंत्र उपासना के प्रथम केन्द्र बिंदु को जला देते हैं। याद करें कि शिव कामदेव का दहन करते हैं, लेकिन माता शक्ति पुनः उसे जीवन प्रदान करती है और पूरे संसार में व्याप्त कर देती है। और यह आदेश देती है कि बिना **मदन आरोहण** किए मेरी पूजा अधूरी रहेगी। जौ रोपा जाता है, कलश के नीचे और उसे लगातार जीवन दायिनी जल प्रदान किया जाता है। जिस प्रकार गर्भ में शिशु का विकास होता है, उसी प्रकार ऊपर बीज और कलश के अंदर से आया जल उसे जीवन प्रदान करता है। ऊपर रोपा गया बीज शिव की कृति है और उसमें जीवन प्रदान करती हैं, माता शक्ति। यही रहस्य है, जीवन का। नहीं तो शक्ति के अभाव में शिव तो शव मात्र है।

4. **गोबर के गणेश जी स्थापित करना** :– एक बात का जवाब दें, आप 33 हजार या मात्र 11 हजार वोल्ट/मेगावाट की बिजली गुजारना चाहते हों और उसके लिए सामान्य सा प्लास्टिक तार इस्तेमाल करें, तो क्या यह तार उस करंट के झटके को सह पाएगा। आपको बिजली मिल पाएगी। बस यही बात है, आप महाशक्ति की आराधना करते हो, उनको प्रचण्ड रूप में प्राप्त करना चाहते हो और उनको झेलने के लिए एक गोबर की पिण्डी मात्र रख देते हो, जिसमें अष्टमी–नवमी आते–आते कीड़े लग जाते है। याद रखें शक्ति की पूजा के साईड इफेक्ट बहुत होते हैं। इसका झटका सर्वप्रथम गणपति गणेश ही झेलते हैं। गणपति तत्व के अभाव में शक्ति विनाशक भी हो जाती है। पुत्र को देखते ही कैसी भी क्रूरा क्यों न हो, कितनी भी प्रचण्ड क्यों न हो, सौम्य रूप धारण करती है, वात्सल्यमय, ममतामय हो जाती है। गणपति के प्रतीक के रूप में कोई अच्छी सी प्रतिमा रखें, नहीं तो ताम्बूल गणपति की स्थापना करें।

5. **शिव एवं विष्णु पूजन को महत्व न देना** :– आमतौर पर पण्डित जी महाराज गणेश पूजन, कलश पूजन करने के बाद सीधे शक्ति के पूजन में हाथ लगा देते हैं, जो कि कभी–कभी गलत निर्णय साबित हो सकता है। महाशक्ति की प्रचण्डता को केवल शिव ही अपनी छाती पर झेलते हैं। शिव प्रथम पुत्र हैं, आद्याशक्ति के। उनके स्वामी हैं। शक्ति को केवल शिव ही आत्मसात कर पाए हैं। शक्ति का अत्यंत प्रचण्ड रूप हैं माता महाकाली एवं कामाख्या देवी के। एक अवतार में मात शिव पर ही पाँव धरे खड़ी है, तो दूसरे अवतार में शिव के नाभी से निकले कमल पर विराजमान हैं। तारा अवतार में तो शिव जगदम्बा के सिर पर विराजमान हैं, तो धूमावती अवतार में महाशक्ति ने शिव का ही भक्षण कर लिया। ध्यान दें

कि गणपति तो केवल प्रथम प्रहरी के रूप में शक्ति की प्रथम प्रचण्डता से बचाने को स्थापित किए जाते हैं, लेकिन महाशक्ति तो संपूर्ण लीला केवल शिव के साथ ही संपन्न करती हैं। यह रहस्य है शक्ति के पूजन में शिवलिंग स्थापित किए जाने का। शिव ही शक्ति को धारण करते हैं। अतः शक्ति पूजन के संपूर्ण लाभ को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम उनसे पहले शिवलिंग पर शिव की पूजा अर्चना संपन्न करें। याद रखें कि एक मात्र शिवलिंग पर भी सभी देवियों की पूजा अर्चना संपन्न की जा सकती है। महाशक्ति अगर आपके पास आएंगी तो अपना परम पवित्र चरण कहाँ रखेंगी, केवल शिवलिंग पर ही। क्या आपको सामर्थ्य है अपने छाती पर महाशक्ति के प्रहार को, आघात को झेलने की।

इसी प्रकार शक्ति के पूजन में शालिग्राम भी रखा जाता है, जो कि शक्ति की प्रचण्डता एवं नकारात्मकता को नियंत्रित करता है। मैंने पहले लिखा कि शक्ति की पूजा के साईड इफेक्ट भी बहुत होते हैं। क्या आपके घरों में जो बिजली का करंट दौड़ रहा है, केवल उसके लाभ ही होते हैं? एक गलत निर्णय लाभ को हानि में भी बदल देता है। शक्ति की पूजा को तो असुर भी संपन्न करते हैं। किसी भी कार्य का फल, तपस्या का ताप सब कुछ अच्छा ही हो, ऐसा नहीं होता। आसुरी तत्वों से एवं शक्ति पूजन के अति खतरनाक तत्वों से रक्षा हेतु तथा नकारात्मकता को सकारात्मकता में परिवर्तन करने हेतु, संहार को पालन में परिणत करने हेतु पूजन स्थल पर विष्णु का प्रतीक शालिग्राम शिला को रखा जाता है।

6. **गले में रूद्राक्ष धारण न करना** :– आमतौर पर अधिकतर मौसमी साधक/भक्त लोग ऐसा ही करते हैं। पहले ही बताया जा चुका है कि शक्ति पूजन के साईड इफेक्ट भी बहुत होते हैं। अगर शक्ति द्वारा पूजन में किसी प्रकार के आघात भी होते हैं, तो यह रूद्राक्ष स्वयं पर उसे झेल लेते हैं। इसके अभाव में बहुत से साधकों को मतिभ्रम होना, शरीर के किसी भाग से खून गिरना, सिर में अचानक पीड़ा झेलना इत्यादि होते हैं। शिव एवं देवी के भक्तों/आराधकों के लिए गले में सिद्ध रूद्राक्ष कवच एवं 108 दानों की रूद्राक्ष माला बहुत ही आवश्यक है। ध्यान दें कि शक्ति के पूजन में हँसी–ठिठोली, मजाक या नियमों की अवहेलना नहीं चलती। देवी का तंत्र मार्गी पूजन जहाँ अति शीघ्र फलदायी होती है वहीं कभी–कभी एक मामूली सी गलती भी सोचनीय विषय बन सकती है। यह एक कटू सत्य है। अतः जानबूझकर आलस्य, प्रमाद एवं अति अहंकार न करें।

7. **भैरव पूजन न करना अथवा उनकी स्थापना नहीं करना** :– आमतौर पर लोग/साधक गणपति एवं पंच महादेवो और नवग्रहों के पूजन करने के बाद सीधे महाशक्ति की पूजा–आराधना चालू कर देते है. पर वे ये भूल जाते है की आदिदेव महादेव ने शक्ति के प्रत्येक अवतार के साथ उनके विशेष भैरव के रूप में लीला की है. ये भैरव शक्ति विशेष के साथ उस महाशक्ति के वाहक होते है. महाशक्ति के पूजन के बाद उनके द्वारा उच्छिष्ट बलि को ये भैरव एवं भैरवीयाँ ही स्वीकार करते है. इसलिए प्रत्येक शक्तिपीठो में माता के साथ उनके भैरव भी स्थापित रहते है. भैरव के अनेक अवतार है. जिनमे से प्रत्येक की जानकारी एक सामान्य साधक को संभव नहीं. अतः आप शक्ति के किसी भी स्वरुप की आराधना करे, बटुक भैरव सभी शक्तिओध्देविओ के पूजन में उनके पुत्र के रूप में स्वीकार है. तांत्रोक्त पूजन भैरव की आराधना के बिना अधूरी है. अगर तांत्रिक बनना चाहते है, तंत्र विद्या पर पूर्ण सिद्धि चाहते है, तो माता जगदम्बा के साथ भैरव को भी पूजन करे, प्रतिक स्वरुप उनके तस्वीर, यन्त्र, प्रतिमा अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष को रख सकते हैं. चाहे तो अदृश्य रूप में भी आप उनका रक्षात्मक देव के रूप में आवाहन कर सकते है. प्रत्येक पूजन के प्रारंभ में पूजन कर्म की आसुरी शक्तिओ एवं बाधा–विध्नो से रक्षा के लिए भैरव की स्थापना की जाती है. भैरव अपने कालदंड के साथ प्रत्येक दुष्ट एवं विरोधी शक्तिओ को दंड देने के लिए विराजमान रहते है. कोई भी अनावश्यक तत्त्व, नकारात्मक चिंतन महाशिव एवं महाशक्ति की पवित्रता को स्पर्श भी न कर पाए, इसका सदा ध्यान रखते है भगवान् भैरव देव अपने सभी मुर्तियो (अवतारों) में.

नोट :– उपरोक्त विषयों पर लिखे गए यह सारे लेख मेरे निजी एवं मेरी तर्क शक्ति पर आधारित है। इसे मानने या न मानने के लिए आप स्वतंत्र है। किसी के विचारों पर अतिक्रमण करना मेरा उद्देश्य नहीं है, बल्कि केवल अपने विचार बताना मात्र है। आप इन सारे तथ्यों को अपने तर्क की कसौटी पर कसकर ही अमल में लाएं। सच कहो तो इन सारे बातों को लिखने से मैं बचना चाह रहा था। पर माता की परम इच्छा। आज दिनांक 19.09.16 की रात्रि में ठीक बारह बजे इसे पूर्ण कर रहा हूँ। पूर्ण रूप से शक्ति की लीला का समय। सारे घर के लोग, मुहल्ले के लोग सो रहे हैं और मैं जाग रहा हूँ। शक्ति के साधनात्मक रहस्यों पर से पर्दा उठा रहा हूँ, उनकी लीलाओं से दो–दो, चार–चार कर रहा हूँ। रात्रि के बारह बजे जब तामसी शक्ति अपने पूरे चरमोत्कर्ष पर रहती है, भगवान श्री कृष्ण के धरती पर पधारने का समय, मैं इस बार के अपने संपूर्ण लेखों को पूर्ण कर रहा हूँ। अब यह इस बार के लिए अंतिम लेख हुआ, शेष अब अगले साल के लिए। अंत में माता की पुनः एक बार विनम्र स्तुति :–

॥ ॐ नमामि त्वां महादेवि महाभयविनाशिनीम्। महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्॥

(महाभय का नाश करने वाली, महासंकट को शांत करने वाली और महान करुणा की साक्षात् मूर्त्ति तुम महादेवी को मैं नमस्कार करता हूँ।)

❄ ❄ ❄

वर्ष 2016 के अंक में प्रकाशित लेख का सभी भक्तजनों एवं साधकों के कल्याण के लिए पुनः प्रकाशन

ॐ

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

"शक्ति अनुसंधान केंद्र की विशेषतायें"

(आखिर आप शक्ति अनुसंधान केंद्र में क्यों आयें?)

1. यहाँ मंत्र प्राप्त करने के लिए दवा खाने का झंझट नहीं है। दवा देना डॉक्टरों का काम है, गुरूओं का नही। किसी अन्य आश्रम से जो आप पाँच-छः सौ रूपये का दवा लेते हैं, उतने पैसों में आपको उच्च कोटि की तंत्र सामग्री, यंत्र, रूद्राक्ष वगैरह उपलब्ध करा दी जाती है; ताकि आप साधना जितनी जल्दी हो प्रारंभ कर सकें।
2. यहाँ अग्नि क्रिया जैसी विधि के लिए नौ दिनों का चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं है। अभिषेक जी एक दिन में ही शरीर पर से सारी नकारात्मक शक्तियों को हटाकर देह बांध देते हैं।
3. यहाँ मंत्र प्राप्त करने के लिए पूर्णीमा का इंतजार करने और घंटों लाइन लगाने की आवश्यकता नहीं है। आप जिस दिन मिलने के लिए आते हैं, उसी दिन मंत्र प्राप्त हो जाता है।
4. यहाँ कागज पर मंत्र लिखकर केवल दे नहीं दिया जाता है, बल्कि स्वयं अपने मुख से उच्चारित करते हैं। गुरू के मुख से मंत्र निकलते ही वह कीलन से मुक्त हो जाता है, और शीघ्र सफलतादायी होता है। मंत्र का उतना महत्व नहीं है, जितना गुरूवाणी का। गुरू अगर 'राम' को 'मरा' भी कहकर दे दे, तो वही सिद्धिदायक हो जाता है।
5. यहाँ मिलने के लिए भूखे पेट आने की आवश्यक्ता नहीं है।
6. यहाँ शरीर पर धारण हेतु विशेष रक्षा यंत्र प्राप्त करने के लिए एक माह तक अगली पूर्णिमा का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है और ना ही मंत्र सुनाने की जरूरत। आप प्रत्येक यंत्र के लिए अति मामूली शुल्क देकर तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। केवल आपके लिए ही नहीं, बल्कि आपके संपूर्ण परिवार एवं मित्रों के लिए भी रक्षा यंत्र मिल सकता है, और इसके लिए सबको मंत्र लेने की आवश्यक्ता भी नहीं। अभिषेक जी अगर किसी पर प्रसन्न हो जाते हैं, तो मुफ्त में भी प्रदान कर देते हैं।
7. यहाँ केवल किसी एक देवता की साधना नहीं होती। बल्कि आपकी रूची अनुसार देवताओं का पूजन कराया जाता है, या अभिषेक जी के स्वविवेक के अनुसार।
8. यहाँ पुराने शिष्य हो जाने पर दुबारा मिलने हेतु किसी प्रकार की मासिक शुल्क की आवश्यकता नहीं। आप कभी भी अपने आध्यात्मिक प्रश्न के निवारण हेतु मिल सकते हैं।
9. यहाँ जप हेतु माला अभिषेक जी के निर्देशन में शास्त्रोक्त विधि से संस्कारित एवं प्राण-प्रतिष्ठित कर के दिया जाता है।
10. किसी भी महाविद्या साधना में खास कर काली, दुर्गा, तारा इत्यादि में शिवलिंग के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं होती। शिवलिंग प्रदान करने की क्षमता सभी गुरूओं में नहीं होती। अभिषेक जी स्वयं अपने हाथों से आपको शिवलिंग प्रदान करते हैं। शिवलिंग को नीलकण्ठास्त्र, पाशुपतास्त्र आदि से प्राण-प्रतिष्ठित किया जाता है।
11. यहाँ एक ही देवता के मंत्रों में अन्य देवताओं के मंत्रों का बेमेल खिचड़ी नहीं बनाया जाता, बल्कि प्रत्येक देवी-देवताओं की स्वतंत्र साधना संपन्न होती है।
12. जब तक व्यक्ति गुरूगृह में पूजन संपन्न न करे, देवता आशीर्वाद नहीं देते। यहाँ अभिषेक जी के साथ पूजन करने के लिए तीन साल लंबे इंतजार की आवश्यक्ता नहीं। अभिषेक जी समय-समय पर विशेष अनुष्ठान संपन्न कराते हैं, जिसमें आप उनके साथ सम्मिलित हो सकते हैं।
13. यहाँ आपको विशेष आध्यात्मिक अस्त्र-शस्त्र (हथियार) चलाने की शक्ति दी जाती है, जो कि पटना के किसी अन्य आश्रम में संभव नहीं।
14. नवरात्र के दिनों में जौ का विशेष महत्व है। अगर आप कलश बैठाना चाहें तो आशीर्वाद स्वरूप जौ प्राप्त कर सकते हैं। जिससे साधना काल में आप पर कोई विध्न नहीं आएगा।
15. नवग्रहों की शांति के लिए आपको मिट्टी लगाने अथवा झंडा गाड़ने की जरूरत नहीं। आप एक विशेष नवग्रह यंत्र प्राप्त कर जिंदगी भर उस पर नवग्रह साधना संपन्न कर सकते हैं।
16. भूत-प्रेत दोष निवारण हेतु यहाँ थुक चटाने या मारने-पीटने जैसी अमानवीय क्रिया नहीं होती।
17. यहाँ केवल उपदेश देकर मन नहीं बहलाया जाता। बल्कि आप की समस्या का वास्तव में समाधान किया जाता है।
18. शक्ति अनुसंधान केंद्र से जुड़ने पर आपको प्रमुख सिद्ध शक्ति पीठों पर ले जाकर साधना संपन्न करायी जाती है, ताकि आप शीघ्र-अतिशीघ्र सिद्धियाँ प्राप्त कर सकें।
19. मंत्र प्राप्त होते ही अभिषेक जी आपको हवन कुण्ड से मंत्र सिद्ध भभूत प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग आप किसी के भी भूत-प्रेत को रोकने में या तबीयत ठीक करने में कर सकते हैं।

20. यहाँ हवा से भभूत निकालने या लड्डु निकालने जैसी फुटपाथी चमत्कार का प्रदर्शन नहीं किया जाता, बल्कि आपकी जिंदगी में वास्तविक चमत्कार उत्पन्न किए जाते हैं, जिससे आपके कष्टों का निवारण हो।
21. अन्य जगहों में ज्योतिषीगण या तथाकथित गुरू महाराज यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा स्वयं न कर, अन्य पेशेवर ब्राह्मणों से करवाते हैं, जो कि उनके लिए केवल लेबर की तरह कार्य करते हैं। जिनमें कोई विशेष दैवीय चेतना न के बराबर होती है। जबकि इसके विपरीत यहाँ अभिषेक जी स्वयं सभी यत्रों का निर्माण करते हैं, एवं प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। इस कार्य के पीछे इनकी अतुलित गुरू भक्ति एवं साधना की शक्ति कार्य करती है। इसलिए कभी-कभी भक्तों को यंत्र प्रदान करने में थोड़ा विलम्ब भी हो जाता है। क्योंकि विशेष मुहूर्त आने पर ही कुछ विशेष यंत्रों की सिद्धि की जाती है। ❄ ❄ ❄

विज्ञापन पृष्ठ

हिमालय रुद्राक्ष प्रचार केंद्र

मखनिया कुआँ पूर्वी गली, पटना–800004

सभी प्रकार के रत्न, उपरत्न, 1 मुखी से लेकर 21 मुखी तक के रुद्राक्ष, विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं के यंत्र एवं मूर्तियाँ, नवग्रहों के यंत्र, रुद्राक्ष एवं स्फटिक की मालायें, स्फटिक के श्री यंत्र, नर्मदेश्वर शिवलिंग, शालिग्राम, सभी प्रकार के शंख एवं विभिन्न तांत्रिक सामग्रियों के थोक एवं खुदरा विक्रेता।

Mob:-9334953969, 8969997281

कृपया सेवा का एक बार मौका अवश्य दें। पहले परखें तब खरीदें।

R.P.S. FOOT WEAR

चौघड़ा, नून का चौराहा, लोहा का पुल, पटना सिटी।

(सर्वोदय एकैडमी की गली में)

यहाँ सभी प्रकार के चप्पल, जूते, असली चमड़े का बेल्ट एवं विभिन्न प्रकार के बैग इत्यादि मिलता है। यहाँ अशक्तों के लिए कमर में लगाया जाने वाला बेल्ट तथा नकली पाँव भी बनाया जाता है।

प्रो0– राजू दास

Mob:- 9570013209, 9534468917

कृपया सेवा का एक बार मौका अवश्य दें। पहले परखें तब खरीदें।

भोला पूजन एवं हवन सामग्री भंडार

(प्रो0– सुखसागर ऊर्फ बिरजू प्रसाद)

चौघड़ा, नून का चौराहा, लोहा का पुल, पटना सिटी।

(सर्वोदय एकैडमी की गली में)

यहाँ सभी प्रकार की पूजन एवं हवन सामग्रियाँ, विभिन्न धार्मिक पुस्तकें, गोमती चक्र, नवग्रहों की समिधायें एवं जड़ी, बिल्कुल ताजा कटा हुमाद, रुद्राक्ष, कमलगट्टा, स्फटिक एवं तुलसी इत्यादि की मालायें, शुद्ध घी, तिल का तेल, सत्यनारायण पूजन सामग्री, गृह प्रवेश के लिए पूजन सामग्री, बैठकी के लिए पूजन सामग्री, दुर्गा पूजा, दीपावली, रुद्राभिषेक, सतैसा एवं नवग्रह शांति हेतु सभी पूजन सामग्री मिलती है।

कृपया सेवा का एक बार मौका अवश्य दें। (Mob:- 7255898570)

न्यूज ट्रैक मैगजीन हाऊस

केसरी मार्केट, पश्चिम दरवाजा, पटना सिटी

यहाँ सभी प्रकार के प्रतियोगिता संबंधी पुस्तकें, समाचार पत्र, धार्मिक पुस्तकें, कम्प्यूटर एवं साइंस संबंधी पत्रिकायें, सभी ऊम्र के लोगों के मनोरंजन हेतु मासिक पत्रिकायें, महिलाओं के लिए मासिक पत्रिकायें इत्यादि मिलती हैं।

यहाँ घर पर समाचार पत्र पहुँचाने की भी व्यवस्था है।

दुकान सुबह 9 बजे से अपराह्न 2 बजे तक तथा शाम में 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुली रहती है।

—: कलश स्थापना से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य :—

कलश में जल

कलश में जल हेतु सदा किसी पवित्र जल धारा का ही लेना चाहिए। इसके लिए शास्त्रों में सात पवित्र नदियों अथवा सात कूपों या समुद्र के जल को मान्यता दी गयी है। यह उपलब्ध न रहने पर अपने आस-पास बहने वाली किसी भी पवित्र नदी या प्राकृतिक जल स्रोतों से प्राप्त जल को मान्यता देनी चाहिए। यह भी न रहने पर किसी पवित्र कुएँ से जल लेना चाहिए। आजकल कुएँ भी अनुपलब्ध हो गए हैं। अत: अपने घर के ही अथवा किसी मंदिर के पवित्र स्थान से जल प्राप्त करना चाहिए।

कलश में मिट्टी

कलश में डालने हेतु सप्तमृतिका को प्रधानता दी गयी है। ये सप्तमृतिका अर्थात् सात प्रकार मिट्टी में साँप के बाँबी की मिट्टी, हाथी के पाँव के नीचे की मिट्टी, अस्तबल की मिट्टी, दीमक की मिट्टी, नदियों के संगम की, तालाब की, राजद्वार अथवा गौशाला की मिट्टी एवं वेश्या के आँगन की मिट्टी सम्मिलित की जाती है। अब के भागम-भाग समय में कहाँ से कोई व्यक्ति उपरोक्त जगहों की मिट्टी खोजता फिरेगा। न तो अब राजा रहे और न ही इस सभ्य समाज में किसी वेश्या की बात सार्वजनिक रूप से उठाई जा सकती है। इसके विकल्प के रूप में आप किसी भी नदी के किनारे की पवित्र मिट्टी ले सकते हैं। इसी प्रकार किसी पवित्र पेड़ के नीचे की मिट्टी भी जहाँ गंदगी न हो ली जा सकती है।

पंचरत्न

कलश में डालने हेतु जिन पंचरत्नों की बात कही गयी है, उनमें सोना, हीरा, मोती, पद्मराग और नीलम सम्मिलित हैं। कुछ जगहों पर पन्ना भी कहा गया है। अब आज के इस महंगाई के युग में भला कितनों के पास ये पंचरत्न होंगे। अधिकतर ने तो देखे भी नहीं होंगे। इसके विकल्प के रूप में आप इन पंचरत्नों के उपरत्न उपयोग कर सकते हैं। इन रत्नों में मोती बहुत ही सस्ती आती है। मोती जल के स्वामी चंद्रमा का ही रत्न है। यह तो आप उपयोग करें ही। अगर ये उपरत्न भी आपसे संभव नहीं हो पायें, तो इसके विकल्प में विभिन्न रंगों के हकीक पत्थर का उपयोग करें। ये बहुत ही सस्ते आते हैं। नवरात्र का पूजन समाप्त होने के पश्चात् या तो इन रत्नों को भी कलश के साथ प्रवाहित कर दें अथवा कलश के जल से निकालकर किसी भी वांछित व्यक्ति को दिया जा सकता है या स्वयं पहनने के लिए भी उपयोग कर सकते हैं। नौ दिनों तक माता जगदम्बा के मंत्रों से अभिमंत्रित होने के कारण ये रत्न सिद्ध हो जाएंगे और आपके जीवन में बहुत ही चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करेंगे। इस प्रकार आप एक प्रकार से देवी कवच से कवचित होंगे।

पंच पल्लव

कलश स्थापना में पंच पल्लव का अर्थ पाँच पत्ते नहीं, बल्कि पाँच प्रकार के पवित्र वृक्षों के पत्ते होते हैं। ये वृक्ष हैं-आम, पीपल, बड़/बरगद, गूलर एवं पाकड़। कुछ जगहों पर पाकड़ की जगह अशोक के पत्तों की भी चर्चा की गयी है। कलश स्थापना में इन पाँचों प्रकार के पत्तों का उपयोग करना बहुत ही शुभ एवं लाभदायक तथा सिद्धि प्रदायक होता है। लेकिन अगर ये पाँचों प्रकार के पत्ते आपसे संभव नहीं हो सके तो केवल आम के पत्ते का भी उपयोग करना सकते हैं। कलश के जल में पत्ते सदा उसके डंठल सहित डालने चाहिए। कुछ लोग कलश के जल में धान की बालियाँ भी डालते हैं। धान की बालियों हेतु मैं मई-जून के महीने में अपने घर के छत पर गमलों में धान के बीज रोप डालता हूँ और आश्विन आते-आते ये बालियाँ उपयोग करने लायक हो जाती हैं।

कलश के नीचे अन्न

आमतौर पर साधारण पूजन में कलश के नीचे जो धान्य डालने का निर्देश दिया जाता है, उसमें धान ही डाला जाता है। किंतु नवरात्र में धान की जगह जौ के विकिरण को प्रधानता दी जाती है।

कलश में सर्वौषधि

कलश के जल में सर्वौषधि अर्थात् सभी प्रकार की औषधि डालने की बात कही जाती है। इन औषधियों में मुरा, जटामासी, वच, कुष्ट, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, कचूर, चम्पक और मुस्ता सम्मिलित है। एक साधारण व्यक्ति कहाँ से इन सभी औषधियों को खोजता फिरेगा। इसके विकल्प के रूप में आप किसी भी कंपनी के हवन सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। आजकल हरिदर्शन, गोल्डी, गायत्री अथवा शिवपूजन हवन सामग्री के पैकेट 50 ग्राम, 100 ग्राम अथवा अधिक के रूप में बाजार में आसानी से उपलब्ध हैं। बस इस हवन सामग्री के पैकेट में से एक चुटकी मात्र ही आपको कलश के जल में डालनी है। बाकी बची हवन सामग्री का उपयोग आप हवन हेतु कर सकते हैं।

ॐ

—: माता दुर्गा की पूजा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य एवं सावधानियाँ : —

1. माता जगदम्बा की पूजा में आप भूल कर भी तुलसी पत्रों का उपयोग नहीं करें। प्रसाद में भी नहीं। देवी दुर्गा, काली अथवा शिव परिवार के किसी भी सदस्य की पूजा में तुलसी जी नहीं चढ़ाये जाते हैं।

2. देवी दुर्गा को कृपा कर दुर्वा (दुभी) अर्पण नहीं करें। दूर्वा माता दुर्गा को नहीं चढ़ाया जाता है। हाँ, गणेश जी, भगवान शिव, माता लक्ष्मी एवं सरस्वती को दुर्वा अर्पण कर सकते हैं। माता काली भी देवी दुर्गा का ही एक प्रचण्ड रूप है। मेरे विचारानुसार माता काली को भी दूर्वादल नहीं अर्पण करना चाहिए।

3. किसी भी देवी की पूजा में तिलक के रूप में सफेद चंदन का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके विकल्प में लाल चंदन के तिलक आप देवी को अवश्य लगायें। देवी की पूजा में सिंदूर का विशेष महत्व है। जहाँ पर कुमकुम शब्द का प्रयोग आया है, वहाँ आप रोली का प्रयोग करें। सौभाग्य प्राप्ति हेतु हल्दी के चूर्ण का भी उपयोग किया जाता है।

4. देवी को इत्र एवं लाल फूल बहुत ही प्रिय हैं। इन्हें आप अवश्य ही चढ़ायें।

5. नवरात्र के पूजन में प्रत्येक दिन के हिसाब से भी नैवेद्य अर्पण किया जाता है। अगर आपसे यह संभव नहीं हो, तो साधारणतः कोई भी मीठा पदार्थ एवं कोई एक फल अवश्य रखें।

6. दुर्गा के पूजन में विशेष अर्ध्य पात्र की स्थापना में शंख का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसके विकल्प में मिट्टी के पात्र अथवा तांबे के पात्र का उपयोग करें।

7. पूजन से पहले न्यास अवश्य करें। यह न्यास अंतःपूजा है। माता जगदम्बा को मंत्रों के माध्यम से अपने अंग-अंग में स्थापित करने की प्रक्रिया है।

8. माता दुर्गा को बिल्व पत्र अवश्य ही अर्पण करें। इसी प्रकार मखाने से बनी माला भी देवी को चढ़ाई जाती है। माता काली को नींबू की माला अतिप्रिय है।

9. सात्विक पूजन पद्धति में माता दुर्गा या काली को बलि के रूप में नींबू, अनार, नारियल, जड़ सहित ईख एवं डंठल सहित भतुए का प्रयोग किया जाता है। बलि हेतु जो भी फल लिया जाय, वह अखंडित एवं बेदाग हो अर्थात् कहीं से कटा-फटा या कीड़ों का खाया हुआ नहीं हो। फल के विच्छेदन हेतु जो शस्त्र उपयोग में लाया जाय, वह केवल पूजन कार्य में ही प्रयोग होना चाहिए। उससे कोई भी अन्य सांसारिक कार्य काटने के रूप में नहीं करना चाहिए। जिस फल को बलि के लिए प्रयुक्त किया जाय, उसे एक ही बार में कटारी, चाकू अथवा तलवार के द्वारा काट देना चाहिए। नारियल एक बार में ही फोड़ना चाहिए।

10. आमतौर पर महिलाओं को बलि कार्य करने की मनाही होती है। लेकिन जो महिलायें स्वयं साधिका हैं, देवी की तांत्रोक्त पूजन स्वयं कर रहीं हों, स्वयं पूजन के मंत्रों का उच्चारण कर रही हों, उन्हें स्वयं ही बलि कार्य करना चाहिए। क्योंकि पूजन करते समय देवी का एक अंश साधकों के तन-मन में समा जाता है। इसलिए देवी स्वयं ही बलि ग्रहण करना चाहती है। किसी भी प्रकार की पशु हिंसा से स्वयं को बचाना चाहिए।

11. देवी के पूजन से पहले सदा गणपति की, शिव की पूजा अर्चना करनी चाहिए। पंचदेव पूजन को प्रधानता देनी चाहिए। अगर गुरुमार्गी हों अर्थात् किसी गुरु से दीक्षित हों, तो गणेश पूजन के बाद गुरु का पूजन संपन्न करने के बाद ही कलश स्थापना एवं मुख्य देवी की पूजा को प्रधानता देनी चाहिए। देवी की पूजा से पहले भैरव का स्मरण अथवा संक्षिप्त पूजन आवश्यक है।

12. एक साधक की कोशिश यह रहनी चाहिए कि नवरात्र में प्रत्येक दिन माँ की षोडशोपचार पूजा संपन्न करें। अगर सभी दिन संभव न हो तो सप्तमी एवं नवमी के दिन अवश्य करें। जो व्यक्ति मूर्त्ति नहीं बैठाते हैं और तस्वीर पर या यंत्र पर ही पहले दिन से पूजा चालू कर देते हैं, उन्हें स्थापना के दिन (प्रथमा) को ही षोडशोपचार पूजा संपन्न कर माँ का आवाहन करना चाहिए। देवी के तांत्रोक्त पूजन को संपन्न करने के बाद नींबू या नारियल की बलि अवश्य देनी चाहिए।

13. माता जगदम्बा अथवा अन्य किसी भी देवी की मात्र एक परिक्रमा की जाती है।

14. पूजन में जिस सामग्री की कमी हो, उसकी पूर्त्ति मानसिक भावना से करनी चाहिए। दूसरा विकल्प यह है कि, उस-उस सामग्री के लिए अक्षत-फूल चढ़ा दें।

15. भगवान शंकर की पूजा में जो पत्र-पुष्प विहित हैं, वे सभी भगवती गौरी को भी प्रिय हैं। अपमार्ग उन्हें विशेष प्रिय है। भगवान शंकर पर चढ़ाने के लिए जिन फूलों का निषेध है तथा जिन फूलों का नाम नहीं लिया गया है, वे भी भगवती पर चढ़ाये जाते हैं। जितने लाल फूल हैं, वे सभी भगवती को अभीष्ट हैं तथा समस्त सुगंधित श्वेत फूल भी भगवती को विशेष प्रिय हैं। बेला, चमेली, केसर, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, मदार, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजिता आदि के फूलों से भी देवी की पूजा की जाती है। शमी, अशोक, अमलतास, गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिंदुवार, शल्लकी, माधवी आदि लताएँ, कुश की मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया तथा कमल - ये सभी फूल देवी को प्रिय हैं।

16. आक, मदार, दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित-प्रतिषिद्ध हैं अर्थात् ये शास्त्रों से विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं। (गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित नित्यकर्म पूजा प्रकाश पुस्तक के पेज नं-360-362)। मेरा मानना है कि इन सभी चीजों को देवी के पूजा में ग्रहण ही न किया जाय।

17. माता जगदम्बा को लाल गुलाब अधिक प्रिय हैं। उनकी तांत्रोक्त पूजा में लाल गुलाब चढ़ाने से वे शीघ्र ही प्रसन्न होती हैं और समस्त शत्रुओं पर विजय दिलाती हैं।

18. नवरात्र में नवार्ण मंत्र, देवी के 108 नाम, सहस्रनाम (1000 नाम) एवं दुर्गा सप्तशती के कुछ विशेष मंत्रों से अवश्य ही हवन करना चाहिए। अगर इनमें सभी नहीं हो पाए, तो जो भी संभव हो, उससे अवश्य करें। नवरात्र के नवें दिन 64 योगिनियों के नाम मंत्र से अवश्य ही आहुति प्रदान करें।

|| ॐ नमश्चण्डिकायै ||

–: श्री दुर्गा नमस्कार स्तोत्र :–

प्रकृति महादेवी भद्रा है तू। तू ही गौरी धात्री व रुद्रा है तू।।
तू है चन्द्र रूपा तू सुखदायनी। तू लक्ष्मी सिद्धि है सिंहवाहिनी।।
हे बेअन्त रूप और कई नाम हैं। तेरा नाम जपते सुबह शाम हैं।।
तू भक्तों की कीर्ति तू सत्कार है। तू विष्णु की माया तू संसार है।।
तू ही अपने दासों की रखवार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू हर प्राणी में चेतन आधार है। तू ही बुद्धि मन तू ही अहंकार है।।
तू ही निद्रा बन देती दीदार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही छाया बन के है छाई हुई। क्षुधा रूप सब में समाई हुई।।
तेरी शक्ति का सब में विस्तार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
है तृष्णा तू ही क्षमा रूप है। यह ज्योति तुम्हारा ही स्वरूप है।।
तेरी लज्जा से जग शर्मसार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही शान्ति बन के धीरज धरावे। तू ही श्रद्धा बन के यह भक्ति बढ़ावे।।
तू ही कान्ति तू ही चमत्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही लक्ष्मी बन के है भण्डार भरती। तू ही वृत्ति बन के कल्याण करती।।
तेरा स्मृति रूप अवतार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही तुष्टि बनी तन में विख्यात है। तू हर प्राणी की तात और मात है।।
दया बन समाई तू दातार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही भ्रान्ति भ्रम उपजा रही। अधिष्ठात्री तू ही कहला रही।।
तू चेतन निराकार साकार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
तू ही शक्ति है ज्वाला प्रचण्ड है। तूझे पूजता सारा ब्रह्माण्ड है।।
तू ही ऋद्धि सिद्धि का भण्डार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
मुझे ऐसा भक्ति का वरदान दो। 'चमन' का भी उद्धार कल्याण हो।।
तू दुखिया अनाथों की गमखार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार स्तोत्र को जो पढ़े। भवानी सब कष्ट उसके हरे।
'चमन' हर जगह वह मददगार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।
नमस्कार है माँ नमस्कार है। तुझे माँ करोड़ों नमस्कार है।।

।। श्री नव दुर्गा दर्शनम्।।

शैलपुत्री

—: श्री गुरु वचन :—

परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंह जी का कथन है कि ईश्वर के प्रेम में, उनकी पूजा-उपासना में कोई शर्त नहीं, जप संख्या की कोई मर्यादा नहीं है। आप इसको समझिए जो पूजन है, वही पूजन करने वाला, वही पूजन ग्रहण करने वाला है, वही पूजन करने की शक्ति देने वाला है, वही पूजन का फल है, वही प्रेरणा है, अर्थात् कहीं कोई फर्क नहीं है। यही परा विद्या है, अर्थात् भगवती स्वयं पूजन हैं, स्वयं अपना पूजन करती हैं, स्वयं ग्रहण करती हैं एवं स्वयं पूजन का माध्यम बनती हैं। जिस दिन आप यह सत्य अंदर से समझ जाओगे, आपको पराविद्या सिद्ध हो जाएगी।

—: विनम्र स्तुति एवं क्षमा प्रार्थना :—

हे आदि शक्ति माता जगदम्बा! इस संपूर्ण मुहूर्त्त विवेचन में, तुम्हारे दिव्य महासौन्दर्य एवं दिव्य लीलाओं का वर्णन् करने में अगर इस छोटी बुद्धि वाले 'अभिषेक' से कहीं कोई गलती या त्रुटियाँ हो गयी हों, तो कृपा कर मुझे क्षमा प्रदान करने की कृपा करें। तेरे दिव्य सौन्दर्य का वर्णन् करने में तो ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश समेत समस्त देवता भी समर्थ नहीं हैं, तो भला यह 'अभिषेक' क्या चीज है। दत्तात्रेय, दुर्वासा, वशिष्ठ, देवगुरू बृहस्पति, दैत्यगुरू शुक्राचार्य, देवराज इन्द्र, राम, कृष्ण, रावण, दैत्यराज बलि तक जब तुम्हारी लीलाओं का वर्णन करने में असमर्थ हैं, तो भला मेरी बुद्धि क्या काम करेगी? बुद्धि के देवता गणेश एवं विद्या की देवी सरस्वती भी तुम्हारी महिमा का संपूर्ण वर्णन जब नहीं कर सकते, तो भला मैं किस प्रकार से कर सकता हूँ? मुझे जो भी समझ में आया माँ, जो कुछ तुने दिखाया, बस उसे जानकर मैंने लिख दिया। एक बालक को पूर्ण अधिकार है, अपनी माता के महासौन्दर्य के बारे में कुछ कहने का। तेरे दिव्य सौन्दर्य की कुछ झांकी मुझे भी मिली, जिसका मैंने अपनी क्षमतानुसार वर्णन किया है। तुम्हारे इस महागोपनीय सौन्दर्य को जो केवल शिव की ही आँखों का विषय है, संसार के सामने लाने की धृष्टता कर रहा हूँ, क्षमा चाहता हूँ। एक माता को पूर्ण अधिकार है, या तो अपने बच्चे को दुलारे अथवा दुत्कारे। तुम्हारी प्रत्येक लीला में मेरा कल्याण ही होगा, ऐसा मैं जानता हँ। बस अपनी कृपा दृष्टि हम सभी पर बनाये रखना। आपका ही- **अभिषेक**

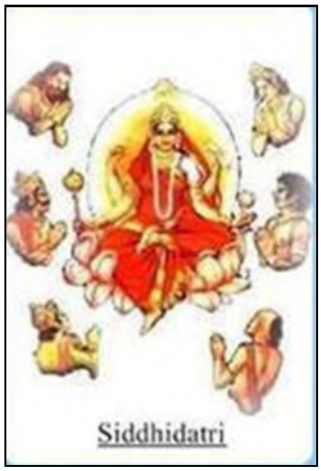

इन्हीं सब आध्यात्मिक शोषणों से सामान्य लोगों को बचाने का शिव संकल्प है मेरा। बाजार में ठाकुर प्रसाद का पंचांग अत्यधिक प्रचलित है। लेकिन जब उसका कम्प्यूटर के आधुनिक सॉफ्टवेयर से तुलना करता हूँ, तो ज्योतिषिय गणना में बहुत–सारी कमियाँ नजर आती हैं। इसलिए इसे मैं ज्यादा महत्व नहीं देता। पंचांग की दुनिया में ठाकुर प्रसाद का एक नाम है, ब्रांड है। हो सकता है कि इसके नाम पर नकली पंचांग हमारे आस–पास के बाजारों में उपलब्ध होते हों। पटना सिटी में तो बड़ी–बड़ी नामी–गिरामी कंपनियों, जैसे डाबर, बैद्यनाथ, झंडु, ग्लैक्सो इत्यादि का भी नकली प्रोडक्ट बना दिया जाता है और ये तो एक साधारण सा पंचांग ही है। लेकिन सस्ते में तथा आसानी से मिलने के कारण लोगों में यह बहुत लोकप्रिय है।

आपको जानकर हैरानी होगी कि इस पुस्तिका का निर्माण मैंने स्वयं अकेले किया है, बिना किसी की सहायता लिए। चाहे वह ज्योतिष की कठिन गणितीय गणना हो, उसका फल विवेचन, भाषा लिपिबद्ध करना अथवा कम्प्यूटर पर टाइप करना या इसका डिजाइनिंग, साज–सज्जाकरण या प्रिंट सब कुछ स्वयं मेरे द्वारा ही संपन्न हुआ है। यह आदिशक्ति माता जगदम्बा के श्री चरणों का कृपा प्रताप है, नहीं तो मुझसे भला क्या हो सकता था? यही माता जगदम्बा का आदि उद्घोष है। जब महाशक्ति चलती है, जो संसार के सारे नियम, धर्म, कानून, देवी–देवता, महापुरुष केवल हाथ जोड़े खड़े रह जाते हैं और माता शक्ति एवं उनके भक्त सब कुछ अकेले ही संभाल लेते हैं। व्यवस्था में परिवर्तन कर के रख देते हैं। शायद इस छोटे से कार्य को मेरे द्वारा संपन्न करवा कर माता जगदम्बा यही अपने सभी साधकों/भक्तों को सिखाना चाहती हैं।

वर्षों पहले भारत के कुछ माननीय अदूरदर्शी नेताओं ने आधुनिक शिक्षा एवं कम्प्यूटर शिक्षा का विरोध किया था। परिवर्तन नहीं चाहते थे। लेकिन इनके किए कुछ हो सका? प्रकृति परिवर्तन चाहती थी, हो गया। स्वयं देखे अगर वर्षों पुरानी तकनीक रहती तो क्या मैं इसे अकेले संपन्न कर सकता। शायद कभी नहीं। इन कुछ पेजों के प्रिंटिंग हेतु मुझे तीन से चार हजार या उससे भी ज्यादा रूपये खर्च करने पड़ जाते। इतना सुंदर बनता भी नहीं। समय लगता सो अलग। पर नयी तकनीक के द्वारा मैंने टोटल कार्य स्वयं कर लिया। बस यही जानें। पूजा–अर्चना में भी समय के अनुसार नयी तकनीक की आवश्यकता पड़ती है। लकीर के फकीर बने रहने से कोई फायदा नहीं। पराशक्तियाँ देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार अपने भक्तों से संवाद करती हैं। अतः आध्यात्म में भी अपने–आप को हमेशा अपटूडेट रखें। 10 वर्ष पहले का किया गया साधना शायद अभी कोई काम का न रहे। अतः नित्य–प्रति साधनात्मक जीवन जीयें। आदिशक्ति जगदम्बा के प्रत्येक इशारे को समझे। नित्य ध्यान करें।

इस पुस्तिका के निर्माण का एक और उद्देश्य है, पंडितों की मनमर्जी पर अंकुश लगाना। अगर समय का महत्व समझते हैं, समय सीमा में बंध कर पूजा करते हैं, तो मुहूर्त्त विवेचन बहुत आवश्यक है। वरना वास्तविक साधकों के लिए तो साल के 365 दिन ही नवरात्र के बराबर होते हैं, कोई समय सीमा नहीं। पंडितों को जब फुर्सत मिलती है, उस समय आ जाते हैं, पूजा करवाने, चाहे मुहूर्त्त रहे या नहीं रहे। यजमान के पूछने पर पोथी–पत्रा पढ़ कर कुछ भी बता देते हैं, जो कि पढ़ते भी वे ही हैं और समझते भी वे ही हैं।

एक विशेष बात, ये व्यावसायिक पंडित लोग जो होते हैं, उनमें से अधिकतर पूजन को केवल कमाने का साधन मानते हैं। वे जल्दी–जल्दी पूजन को निपटाते हैं और दूसरे यजमान के यहाँ निपटाने को घड़ी देखते रहते हैं। एक बात जान लें कि महाशक्ति की पूजा को निपटाया नहीं जाता, बल्कि शक्ति को धारण किया जाता है। यहाँ तो माँ–पुत्र का परम प्रेम है, महावात्सल्य है। अगर संस्कृत के कठिन श्लोक नहीं आते, तो चालीसा पढ़िये, उससे भी आपको उतनी ही माता की कृपा दृष्टि प्राप्त होगी। कोई जरूरी नहीं कि संपूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ किया ही जाय। आप इसके कुछ खास शीर्षकों को भी पढ़ सकते हैं। समझने की बात है कि जो आसानी से प्रेम पूर्वक संभव हो जाय, मन पर बोझ न लगे। किसी और के द्वारा करवाने से अच्छा है, जैसे भी संभव हो, स्वयं करें। हाँ, अगर तंत्र सिद्धि करने की इच्छा रखते हैं, तो किसी विशेषज्ञ के श्री चरणों में अपना अहंकार समर्पण कर, भली–भाँति सीख लें। जब प्रकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्ति की बात आती है, तो गुरु के श्री चरणों में झुकना ही पड़ेगा। गुरु के चरणों से ही ज्ञान की परम गंगा प्रवाहित होती है।

इस पुस्तिका के निर्माण में मैंने पिछले एक महीने से अपना सब कुछ अर्पण कर दिया। घर–परिवार की जिम्मेवारियों को निभाना, कार्यालय में 10–12 घंटे समय देना, शिष्यों एवं श्रद्धालुओं से मिलना। इन सब अति व्यस्तताओं के बीच इस महत् कार्य के लिए भी समय निकालना, कुछ लिखना मेरे लिए बड़ा श्रम साध्य हो गया। मेरा नींद एवं चैन इस एक महीने में समाप्त सा हो गया, क्योंकि चाहकर भी अन्य लेखन कार्यों में लगा होने के कारण पहले से इस कार्य के लिए समय नहीं निकाल पाया था। अब जब कि पूरा हुआ है तो मैं चैन की साँस लेता हूँ और इसे आप सभी श्रद्धालुओं के कर–कमलों में अर्पित करता हूँ। अब एक महीने बाद मैं गहरी नींद सोऊंगा और ध्यान की परम तुरीयावस्था में, गहन समाधि में पुनः जाऊँगा। अगर इस पुस्तिका निर्माण में कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों, तो इससे अवगत करा देंगे। आलोचना सहर्ष स्वीकार है।

आपका ही–

अभिषेक

❄अंत में – जय जय माँ दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।❄

।। माँ ।।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

।। ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

।। ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

।। जयन्ती, मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।। जय त्वं देवि चामुण्डे, जय भूतार्तिहारिणि, जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते।।

।। ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।।   ।। क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ।।   ।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं
सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं
क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

।। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः।।   ।। ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात्।।   ।। ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ ।।

यह मुक्ति का महामंत्र है।

समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्ति हेतु एवं विश्व व्यापी आतंकवाद से मुक्ति प्राप्ति हेतु इस मंत्र का अवश्य जप एवं अनुष्ठान करें।

प्रथम प्रवक्ता एवं प्रथम उद्घोषक
श्री श्री अभिषेक कुमार,
(मंत्र, तंत्र यंत्र विशेषज्ञ, महाविद्याओं के सिद्ध साधक एवं शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0:— हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी.
Mob:- 9852208378, 9525719407. E-mail:- shaktianusandhankendra@gmail.com